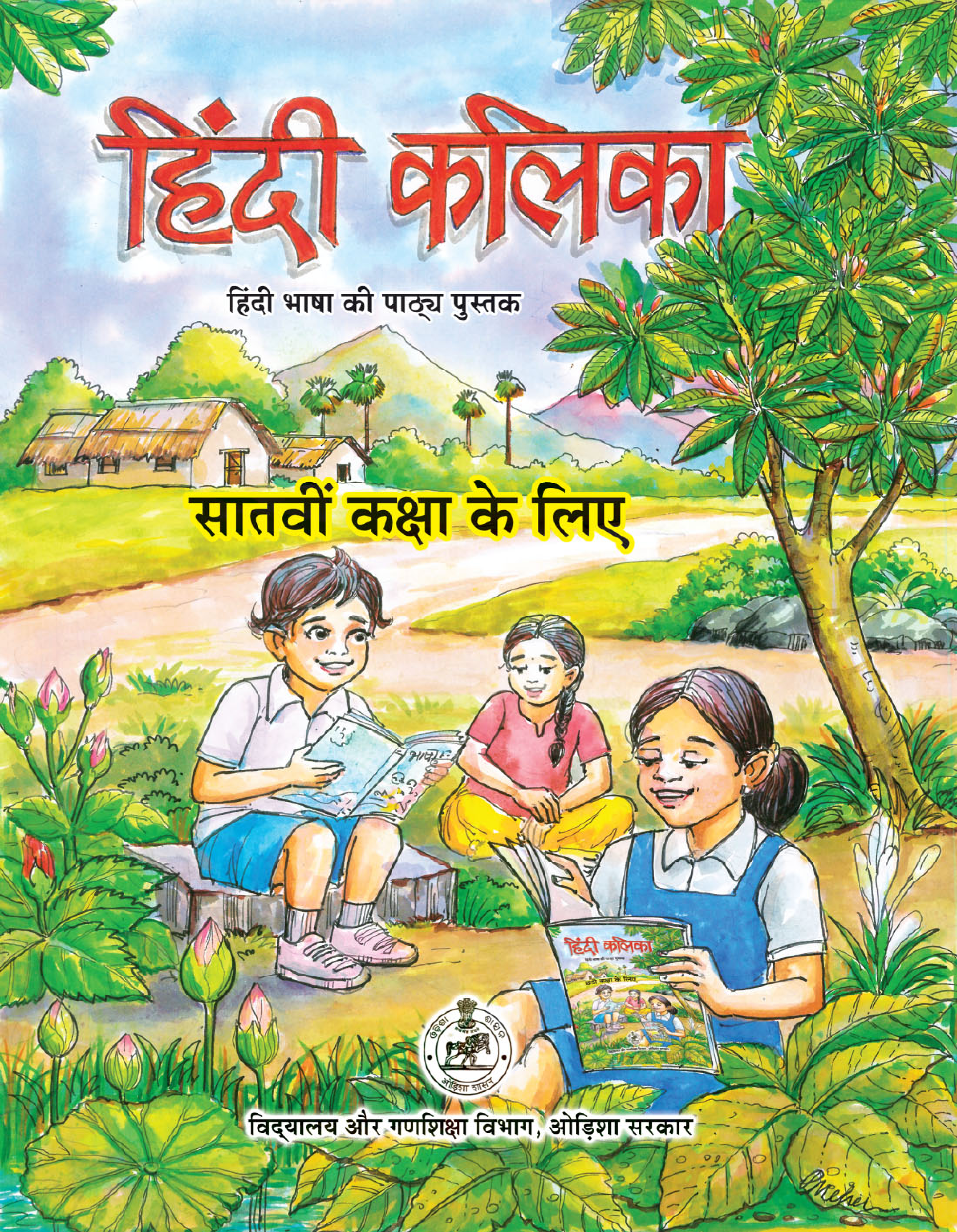
हिंदी कलिका
हिंदी भाषा की पाठ्य पुस्तक
सातवीं कक्षा के लिए
विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार

मेरा नाम :...

मेरे पिताजी का नाम :...

मेरी माताजी का नाम :..

अपने विद्यालय का नाम :...

कक्षा-शिक्षक /

शिक्षिका का नाम:...

मेरे गाँव /

मुहल्ले का नाम :...

हिंदी कलिका

दूसरा भाग

सातवीं कक्षा के लिए

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग
ओड़िशा सरकार

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ।
ओड़िशा, भुवनेश्वर ।

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा
कार्यक्रम प्राधिकरण
भुवनेश्वर ।

हिंदी कलिका

सातवीं कक्षा के लिए पाठ्य पुस्तक

सम्पादक मंडली

डॉ. लक्ष्मीधर दाश
श्री आशीष कुमार राय
श्रीमती पद्मिनी परिड़ा
श्री देवहरि साहु

समीक्षक

प्रो. डॉ. सत्यनारायण पंडा
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
श्री आशीष कुमार राय
श्री विनय कुमार पाठक

संयोजक

डॉ. सुदर्शन सांतरा

मुख्य संयोजिका

डॉ. सविता साहु

विषय विशेषज्ञ

प्रो. डॉ. सत्यनारायण पंडा
श्री विनय कुमार पाठक

प्रकाशक: विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार

परीक्षामूलक संस्करण - 2026

प्रस्तुति : शिक्षक शिक्षा निदेशालय और राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा - नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है। इसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान-परंपरा सन्निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है।

नई शिक्षानीति में निहित चुनौतियों और सुझावों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2023) में सभी स्तरों की पाठ्यचर्या तैयार की गई है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2023 का उद्देश्य है कि बुनियादी और आरंभिक स्तर पर विद्यार्थियों के पंचकोशीय विकास को सुनिश्चित करते हुए मध्य स्तर पर उनके विकासात्मक स्वरूप को अग्रसर किया जाए। इस प्रकार यह मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती है।

मध्यस्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है; विद्यार्थियों को कौशलों में दक्ष करना, जिससे उनकी विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करने के साथ उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार किया जा सके । मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को शामिल किया गया है जो विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा शामिल हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के बीच इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ऐसी निर्णायक भूमिका जो विद्यार्थियों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा-नियोजन और विषयों की पढ़ाई के बीच उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों की तैयारी भी आवश्यक है ।

कक्षा-सात के लिए निर्मित 'हिंदी कलिका' पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं । इनमें देशप्रेम, पर्यावरण, विज्ञान, खेल, सामाजिक और पारिवारिक मूल्यबोध एवं महापुरुषों के प्रति आदर भाव सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2023 के अनुसार यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों की अवधारणा, समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता आदि के विकास पर बल देती है ।

पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों और प्रश्न- अभ्यास, वैयक्तिक रूप से और समूह में सीखने में रोचक होंगे। इससे विद्यार्थियों का बहुआयामी विकास होगा ।

इस पाठ्य पुस्तक में अनेक रोचक विचार और गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थी इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ने में रुचि रखेंगे। विद्यार्थी अपने मित्रों तथा शिक्षकों से मिलकर गतिविधियाँ करेंगे । समूह में सीखना बहुत रोचक होता है। सीखने की प्रक्रिया आनंदमय और लाभप्रद बनती है ।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि पाठ्य पुस्तक शिक्षण शास्त्रीय बोधगम्यता, मौलिकता, तर्कशीलता आदि के निर्णय लेने में ध्यान केंद्रित करती हैं। इस स्तर पर विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं, इसलिए सीखने के मूल सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियों की रूपरेखा बनाते समय उनकी उत्सुकता बढ़ाने पर ध्यान रखा गया है ।

इसी तरह इस पुस्तक से सीखना अपने आप में महत्वपूर्ण है, साथ ही यह अपेक्षा है कि विद्यार्थी इस तरह बहुत-सी अन्य पुस्तकें भी पढ़ेंगे और सीखेंगे। विद्यालयों में पुस्तकालयों को भी इस संबंध में सदा तैयार करने की आवश्यकता है। साथ ही, इस प्रकार से माता- पिता और शिक्षक उन्हें और अधिक सीखने में सहायता करेंगे, ऐसी अपेक्षा है ।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सीखने के लिए प्रभावी वातावरण ही सुनिश्चित कर सकता है कि विद्यार्थी ध्यान, उत्साह और जुड़ाव के साथ सीखने के लिए प्रेरित रहें और जिज्ञासा तथा सृजनशीलता के विकास हेतु प्रोत्साहित रहें ।

इस विश्वास के साथ, मैं यह पुस्तक सातवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का आभार व्यकत करता हूँ । जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है । आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी ।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी, जिससे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है ।

इन सारी रचनाओं के रचनाकारों के साथ-साथ आवश्यक चित्र बनाने वाले चित्रकारों को भी शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा तथा ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण की ओर से धन्यवाद दिया जाता है ।

मैं सलाहकारों, मार्गदर्शकों, संपादक तथा पुनरीक्षण मंडल के सदस्यों डॉ. लक्ष्मीधर दाश, आशीष कुमार राय, पद्मिनी परिड़ा, देवहरि साहु, डॉ. सत्यनारायण पंडा और विनय कुमार पाठक, संयोजिका तथा पाठ्यचर्या विभाग की प्रभारी डॉ. सविता साहु तथा संयोजक डॉ. सुदर्शन सांतरा को धन्यवाद देता हूँ ।

प्रस्तुत पुस्तक की सफल तैयारी तथा विकास में पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं मान्यवर केंद्रमंत्री श्रीयुत धर्मेंद्र प्रधान, मान्यवर शिक्षामंत्री श्रीयुत नित्यानंद गंड, गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार; सचिव व कमिश्नर श्रीमती शालिनी पंडित, शिक्षा विशेषज्ञ, समिति के माननीय सदस्यों तथा जिन-जिन स्रोतों से सामग्री ली गई है, उनके प्रति मैं अपने अंत:करण से आभार प्रकट करता हूँ ।

(श्रीयुत मनोज कुमार पाढ़ी)
निदेशक
ओ.प्र.से.
शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं राज्य
शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा,
भुवनेश्वर - 1

पाठ्यपुस्तक के संबंध में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि सातवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'हिंदी कलिका-2' आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2023 के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2023 (विद्यालयी शिक्षा) का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे हमारे विद्यार्थी अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। विद्यार्थियों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अत: यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की जीवन-शैली सहित उनमें व्यवहारगत बदलाव का परिलक्षित होना भी है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्य का सीधा संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों को अन्वेषण, सार्वजनिक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विद्यार्थी भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें, अपितु इसके सौंदर्य शास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझे। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है –

1. पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, संवाद, पहेली आदि से विद्यार्थियों को रुचिपूर्ण अध्ययन से परिचित करवाया गया है। अभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।
2. पाठों को सरल से जटिल एवं संश्लिष्ट की ओर बढ़ाते हुए क्रम में व्यवस्थित किया गया है। साथ ही बदलती हुई ऋतुओं एवं पर्व-त्योहार के महीनों को भी ध्यान में रखते हुए पाठों को संयोजित किया गया है।
3. पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा-परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रही भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।

4. यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से विद्यार्थियों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है ।
5. विभिन्न भाषाई कौशलों, जैसे-समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों के जीवन और उनके आस पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है ।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

प्रारंभिक स्तर (प्रिपरेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं –

पाठ्यचर्या-लक्ष्य-1: विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करना है।

पाठ्यचर्या-लक्ष्य- 2. परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे - गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करना है ।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-3. विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न विद्यालय संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द-भंडार विकसित करना है ।

पाठ्यचर्या-लक्ष्य-4. पढ़ने में रुचि और जिज्ञासा को विकसित करना है। पुस्तकालय से पुस्तकें पढ़ने में रुचि प्रदर्शित करना है ।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति भी एक प्रमुख उद्देश्य है । पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं को निरंतरता के साथ सीखने के प्रतिफल तय किए गए हैं । यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है ।

चूंकि विद्यार्थी ओड़िशा में छठी कक्षा से हिंदी सीखते हैं इसलिए उनके पाठ में भाषाई कौशलों के विकास पर अधिक बल दिया गया है। हर पाठ की समाप्ति के बाद भाषा-कार्य द्वारा उनके श्रवण-भाषण-वाचन-लेखन कौशलों के विकास करने की सामग्री दी गई है ।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में विद्यार्थी पर्याप्त कल्पनाशील होते हैं । इसलिए पाठों के माध्यम से उन्हें कल्पना- जगत में प्रवेश करने को प्रोत्साहित किया गया है ।

जिज्ञासा और खोजबीन करना विद्यार्थियों की मूल प्रवृत्तियों में से एक है । इस प्रवृत्ति को शांत करने के लिए पाठों में अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं ।

रचनात्मकता मन की बात करने, रचने और लिखने का अवसर प्रदान करती है, पुस्तक में पाठों में दी गई गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को कुछ रचना करने को प्रोत्साहित किया गया है ।

परिवेश संवेदनशीलता और समेकन

पाठों में ध्यान दिया गया है कि विद्यार्थी अपने परिवेश के प्रति अधिक संवेदनशील हों । भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्य-सामग्री के साथ उपयुक्त शिक्षा - शास्त्रीय दृष्टि का समेकन किया गया है ।

पाठ्य पुस्तक में पाठ्य-सामग्री का संयोजन : पाठ्यक्रम में जिन विषयवस्तुओं का उल्लेख किया गया है, उन्हें पाठ्य पुस्तक के पाठों, चित्रों एवं अभ्यास-कार्यों में एकीकृत करने का प्रयास किया गया है ।

पुस्तक के प्रारंभ में 'सीखो' कविता में विद्यार्थियों को प्रकृति के विभिन्न उपादानों से प्राप्त होने वाली सीख का वर्णन किया गया है, जिससे विद्यार्थी मानवीय मूल्यबोध को अपने जीवन में उतारे। 'अपना-अपना काम' पाठ में विद्यार्थियों को श्रम के महत्व और उसकी विविधता के संबंध में बताया गया है, जिससे विद्यार्थी श्रम के महत्व को आत्मसात कर सके। 'आई वर्षा रानी' गीत में वर्षा के समय का दृश्य और वर्षा को देख कर किस-किस पर कौन कौन-सा प्रभाव पड़ता है, उसका वर्णन किया गया है ।

'आसमान गिरा' कहानी में विद्यार्थियों के मन में आनंद और हास्य उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। 'रथयात्रा' पाठ में विद्यार्थियों को जगन्नाथ धाम और वहाँ की प्रसिद्ध रथयात्रा से परिचित कराया गया है। 'बया हमारी चिड़िया रानी' कविता में पर्यावरण पर महत्व दिया गया है । यहाँ मनुष्य और पक्षी में कैसे भावनात्मक एकता प्रतिष्ठित होती है, उस पर ध्यान दिलाया गया है ।

'कवि यदुमणि' पाठ में हास्य रस को महत्व दिया गया है साथ में उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है । 'नीम' कविता में भारतीय परंपरा और संस्कृति के महत्व के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति मित्रता के भाव को भी उद्घाटित किया गया है। 'चंद्रयान' विज्ञान पर आधारित पाठ है, जिससे चंद्र पर पहुँचने तक की वैज्ञानिक उपलब्धि पर प्रकाश डाला गया है ।

'हिमालय' कविता में साहस, दृढ़ता और कर्मतत्परता पर महत्व दिया गया है। सभी को हिमालय से प्रेरणा लेकर कर्म करने का परामर्श दिया गया है। 'हमारे मधुबाबू' जीवनी पर आधारित पाठ है। इसमें उनके मातृभूमि प्रेम, भाषा प्रेम, परोपकार आदि महान गुणों पर प्रकाश डाला गया है। 'हम अनेक किंतु एक' कविता राष्ट्रप्रेम पर आधारित है, इसमें भारत की विविधता में एकता से परिचित कराया गया है। 'सुंदर हॉकी का गढ़' पाठ में राष्ट्रीय खेल के रूप में बहुचर्चित हॉकी के खेल से विद्यार्थियों को परिचित कराया गया है, साथ ही ओड़िशा के सुंदरगढ़ जिले को विशेष महत्व दिया गया है, जहाँ से दिलीप तिर्की जैसे अनेक प्रख्यात खिलाड़ी सामने आए हैं । पहेलियाँ' पाठ के द्वारा पहेली की विधा से परिचित कराते हुए विद्यार्थियों में सोचने-समझने की क्षमता विकसित करने का प्रयास रहा है ।

सत्यमेव जयते

भारत संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना **की स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक की समीक्षा के लिए कोर समिति

१.	कमिशनर तथा शासन सचिव, विद्यालय और गणशिक्षा विभाग	-	अध्यक्ष
२.	राज्य प्रकल्प निदेशक, ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण	-	सदस्य
३.	निदेशक, उच्च माध्यमिक शिक्षा	-	सदस्य
४.	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा	-	सदस्य
५.	निदेशक, प्राथमिक शिक्षा	-	सदस्य
६.	अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा परिषद	-	सदस्य
७.	अध्यक्ष, उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद	-	सदस्य
८.	निदेशक, पाठ्यपुस्तक निर्माण और विक्रयकेंद्र	-	सदस्य
९.	निदेशक, वैषयिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय	-	सदस्य
१०.	निदेशक, ओड़िआ भाषा प्रतिष्ठान	-	सदस्य
११.	निदेशक, समाज कल्याण, महिला और शिशु विकास विभाग, ओड़िशा	-	सदस्य
१२.	प्रतिनिधि, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद	-	सदस्य
१३.	अध्यक्ष, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर	-	सदस्य
१४.	प्रो. नित्यानंद प्रधान, अवसरप्राप्त अध्यक्ष, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और अध्यक्ष, एस.सी.एफ., ओड़िशा	-	सदस्य
१५.	डॉ. गोपाल प्रसाद महापात्र, अवसरप्राप्त सहयोगी प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)	-	सदस्य
१६.	डॉ. किशोर चंद्र महांति, अवसरप्राप्त शिक्षावित (विज्ञान)	-	सदस्य
१७.	डॉ. विनय पट्टनायक, मुख्य परामर्शदाता, एन.एस.टी.सी. कार्यक्रम	-	सदस्य
१८.	डॉ. सुशांत दास, पूर्व अध्यक्ष, उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा	-	सदस्य
१९.	डॉ. ललित कुमार लेंका, अवसरप्राप्त सहयोगी प्रोफेसर, ओड़िआ विभाग, एकाम्र कॉलेज, भुवनेश्वर	-	सदस्य
२०.	डॉ. सरोजलक्ष्मी सिंह, अध्यक्ष, रमादेवी उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुवनेश्वर	-	सदस्य
२१.	डॉ. खगेश्वर दास, अंग्रेजी विशेष, अध्यक्ष, पद्मपुर कॉलेज, बरगड़	-	सदस्य
२२.	डॉ. बलराम साहु, प्रोफेसर माइक्रोबाइयोलोजि, सोआ विश्वविद्यालय, ओड़िशा कृषि एवं वैषयिक विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	-	सदस्य
२३.	डॉ. गौरांग महांति, भौतिक विज्ञान विशेषज्ञ, अवसरप्राप्त अध्यक्ष, खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय, ब्रह्मपुर, गंजाम	-	सदस्य
२४.	निदेशक, शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं राज्य शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा	-	सदस्य

वंदे उत्कळ जननी

वंदे उत्कळ जननी
चारुहासमयी चारुभाषमयी जननी, जननी, जननी ।
पूत-पयोधि-बिधौत-शरीरा,
ताळतमाळ-सुशोभित-तीरा,
शुभ्र तटिनीकूळ-शीकर–समीरा
जननी, जननी, जननी ।।

घनबनभूमि राजीत अंगे,
नीळ भूधरमाळ साजे तरंगे,
कळ कळ मुखरित चारु बिहंगे
जननी, जननी, जननी ।।

सुंदरशाळि-सुशोभित-क्षेत्रा,
ज्ञानविज्ञान-प्रदर्शित-नेत्रा
योगीऋषिगण- उटज पवित्रा
जननी, जननी, जननी ।।

सुंदर मंदिर मंडित-देशा,
चारु कळावळी-शोभित–वेशा
पुण्य तीर्थचय-पूर्ण–प्रदेशा
जननी, जननी, जननी ।।

उत्कळ शूरवर-दर्पित–गेहा,
अरिकूल-शोणित-चर्च्चित-देहा,
विश्वभूमंडळ-कृतबर–स्नेहा
जननी, जननी, जननी ।।

कबिकुळमौळि सुनंदन-वंद्या,
भुवन बिघोषित-कीर्त्तिअनिंद्या,
धन्ये, पुण्ये, चिरशरण्ये
जननी, जननी, जननी ।।

विषय-सूची

इकाई - 1

1.	–	सीखो (पद्य)	1 - 7
2.	–	अपना-अपना काम (गद्य)	8 -16
3.	–	आई वर्षा रानी (पद्य)	17 - 22

इकाई-2

4.	–	आसमान गिरा (गद्य)	23 -31
5.	–	रथयात्रा (सिर्फ पढ़ने के लिए)	32 - 34
6.	–	बया हमारी चिड़िया रानी (पद्य)	35 - 40

इकाई–3

7. – कवि यदुमणि (गद्‌य) 41 - 48

8. – नीम (पद्‌य) 49 - 56

9. – चंद्रयान (संवाद) 57 - 66

इकाई–4

10. – हिमालय (पद्‌य) 67 - 72

11. – हमारे मधुबाबू (गद्‌य) 73 - 79

12. – हम अनेक किंतु एक (पद्‌य) 80 - 85

13. – सुंदर हॉकी का गढ़ (सिर्फ पढ़ने के लिए) 86 - 89

14. – पहेलियाँ (चिंतन और मनोरंजन के लिए) 90-91

1

सीखो

कविता

फूलों से नित हँसना सीखो, भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित, सीखो शीश झुकाना।

सीख हवा के झोंकों से लो, कोमल भाव बढ़ाना।
दूध और पानी से सीखो मिलना और मिलाना।

सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो सबको गले लगाना।

दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना ।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की सच्ची सेवा करना।

जलधारा से सीखो आगे जीवन-पथ पर बढ़ना।
और धुएँ से सीखो हरदम, ऊँचे ही पर चढ़ना।

-श्रीनाथ सिंह

शब्दार्थ

नित - रोज	तरु - पेड़, वृक्ष	अँधेरा - अंधकार
भौंरा - भ्रमर	गले लगाना - स्नेह करना	हरदम - हर समय, लगातार
शीश झुकाना - सिर नीचे करना	हरना - दूर करना	पथ - रास्ता, राह

बातचीत के लिए

1. आपको इस चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है ?
2. इनमें से क्या-क्या आप प्रतिदिन देखते हैं ?
3. उगता हुआ सूरज देखने में कैसा होता है ?
4. रंग-बिरंगे फूलों को देखकर आपको कैसा लगता है ?
5. खुले आसमान में पक्षियों का उड़ना आपको कैसा लगता है ?

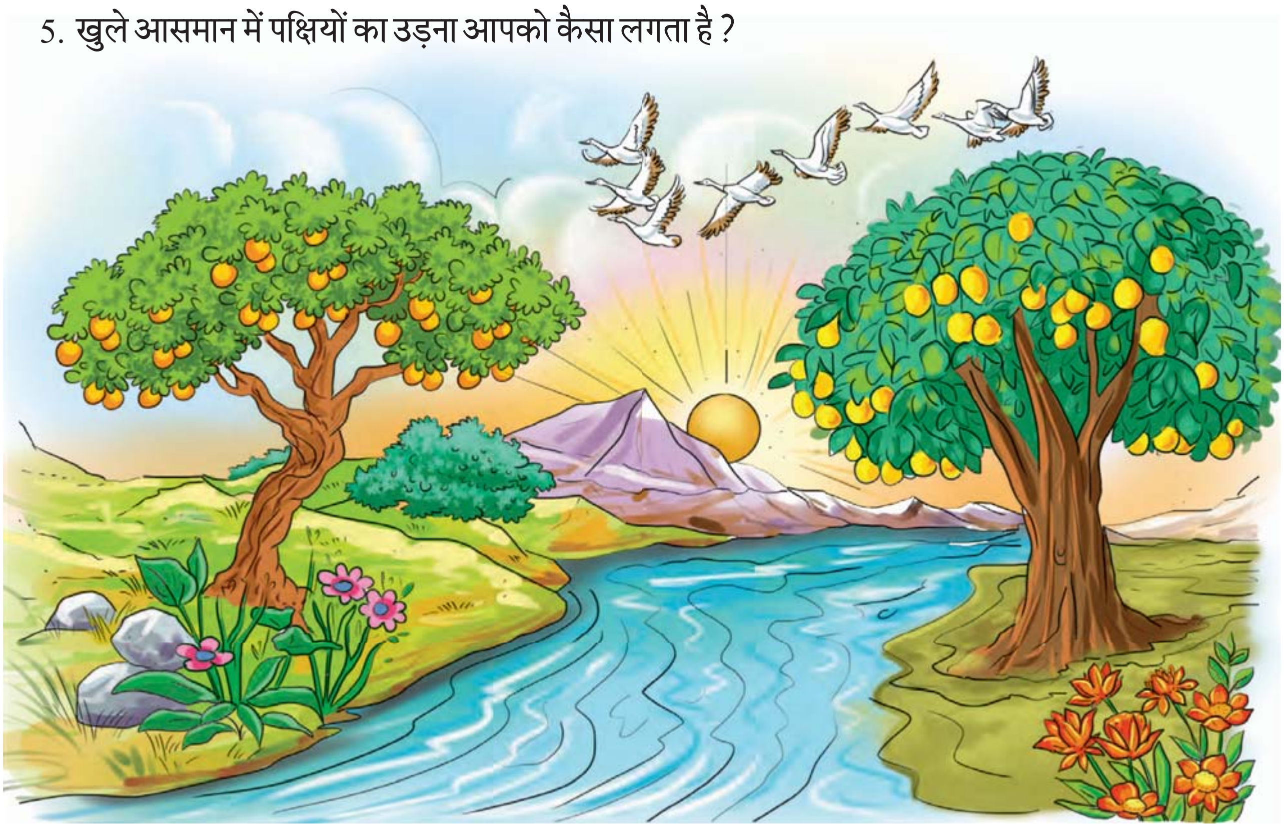

सोचिए और लिखिए

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में दीजिए -

(क) हम किससे हँसना सीखेंगे ?

(ख) हम भौंरों से क्या सीखेंगे ?

(ग) हम दूध और पानी से क्या सीखते हैं ?

(घ) हम दीपक से क्या सीखते हैं ?

(ङ) हम पृथ्वी से क्या सीखते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(क) 'कोमल भाव बढ़ाना' हमें किससे सीखना चाहिए ?

(ख) 'जगना और जगाना' हम किससे सीखेंगे ?

(ग) सबको गले लगाने का भाव हम किनसे सीखेंगे ?

(घ) जीवन-पथ पर आगे बढ़ने की बात हम किससे सीखेंगे ?

(ङ) 'ऊँचाई पर चढ़ना', हमें किससे सीखना चाहिए ?

3. 'क' स्तंभ के चित्रों के साथ 'ख' स्तंभ का मिलान कीजिए-

(क)	(ख)
	जगना और जगाना
	अंधेरा दूर करना
	सबको गले लगाना
	हँसना
	शीश झुकाना

अनुमान और कल्पना

1. कविता में किससे सीखने की बात आप को सबसे अच्छी लगी ?

किन्हीं दों के चित्र बनाइए और नाम लिखिए-

नाम - ....   नाम - ....

2. सोच-समझकर उत्तर दिजिए

(क) फूलों से हमें हँसना सीखना चाहिए। हँसना हम सब के लिए क्यों जरूरी है ? इसके बारे में कोई दो बातें लिखिए-

(i) ....

....

(ii) ....

....

(ख) सूरज से जगना और जगाना सीखने की बात कही गई है। हम सूरज से और क्या-क्या सीख सकते हैं ? कोई दो बातें लिखिए -

(i) ....

....

(ii) ....

....

(ग) सभी बच्चों में कोई-न-कोई विशेषता अवश्य होती है। आप अपने किसी सहपाठी की कुछ विशेषताओं के बारे में लिखिए -

....

....

....

घ) आपके घर में कौन-कौन रहते हैं ?

....

ङ) उनसे आप क्या-क्या सीखते हैं लिखिए-

....

....

....

....

च) सच्ची सेवा अपना धर्म है। आप अपने समाज और राष्ट्र के लिए कौन-कौन सी सेवा करना चाहेंगे ?

....

....

....

....

भाषा - ज्ञान

1. दूध और पानी से सीखो मिलना और मिलाना

रेखांकित शब्दों की तरह कुछ और शब्द बनाइए -

जैसे- हँसना और हँसाना   खाना और खिलाना

....

....

2. 'क' स्तंभ के साथ दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द 'ख' स्तंभ में दिए गए हैं, उनका मिलान कीजिए–

'क'		'ख"
हँसना	-	उजाला
कोमल	-	उतरना
अँधेरा	-	कठोर
सच्चा	-	रोना
चढ़ना	-	झूठा

3. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार खाली जगहों को भरिए -

बालक हँसता है - बालिका हँसती है

बच्चा खेलता है - बच्ची ....

आदमी काम करता है - औरत ....

राम जाता है - सीता ....

लड़का .... - लड़की पढ़ती है

रोहन .... - पायल नाच रही है

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए -

तरु – ....

शीश – ....

पृथ्वी – ....

अँधेरा – ....

कोमल – ....

सेवा – ....

2 अपना-अपना काम

कहानी

सिमरन बाग में बैठी स्कूल का काम कर रही थी । ''ओहो ! मैं तो थक गई । इतना सारा पढ़ने-लिखने का काम !'' वह सोचने लगी, ''स्कूल जाओ तो वहाँ पढ़ो, घर आओ तो फिर पढ़ो। कितना अच्छा होता अगर मुझे पढ़ना न पड़ता।''

पुस्तक रख सिमरन चारों ओर देखने लगी। उसने देखा कि मधुमक्खियाँ आनंदपूर्वक एक फूल से दूसरे फूल तक उड़ रही थीं ।

''मैं भी मधुमक्खी बनना चाहती हूँ,'' सिमरन ने कहा। भिन-भिन करती मधुमक्खियाँ रुक गईं। वे अचंभित होकर बोलीं, ''तुम तो इतनी सुखी हो, तुम क्यों हम जैसा नन्हा कीड़ा बनना चाहती हो ?''

''मुझे क्या सुख है ? इतना तो पढ़ना पड़ता है। मैं तो तुम्हारी तरह डाल-डाल, फूल-फूल उड़ना चाहती हूँ।'' सिमरन ने कहा ।

''इधर से उधर उड़ना हमारा काम है। सारे दिन उड़-उड़ कर रस इकट्‌ठा करते-करते हमारे पंख थक जाते हैं और ....''

''ओहो !'' सिमरन ने कान बंद कर लिए, ''सारे दिन पंख फैला कर उड़ना पड़े तो मैं थक जाऊँगी । ना, ना...''

फिर उसने ऊपर देखा ! फलो से लदा पेड़ । ''हाँ, अगर मैं पेड़ होती तो अच्छा होता । आराम से एक जगह खड़े-खड़े सब कुछ मिल जाता।''

पेड़ हँसने लगा, ''मैं समझ गया। तुम सोचती हो कि मैं आराम से खड़ा रहता हूँ, बस !''

''सुनो'' पेड़ ने कहा, ''मेरे शरीर का तो हर अंग दिन-रात काम करता है। जड़ें मिट्‌टी से पानी खींचती हैं । पत्ते दिनभर खाना बनाते हैं और इतने परिश्रम के पश्चात जो फल उगते हैं, वे भी हम तुम्हें दे देते हैं..!''

सिमरन ने आँखें झुका लीं, ''सच ! ये पेड़ तो बहुत परिश्रम करते हैं। फल तो हम ही खा लेते हैं।''

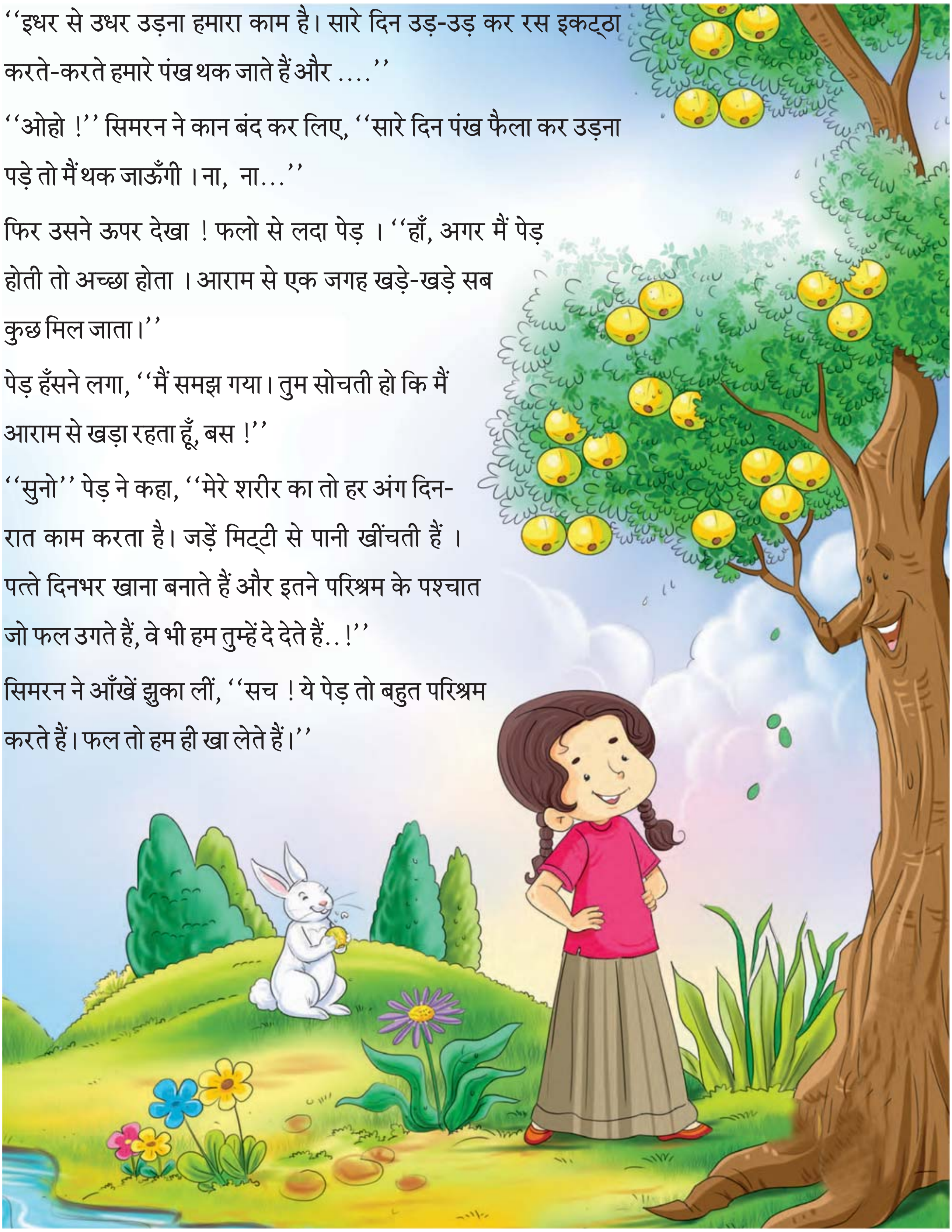

‘‘लेकिन इन चिडियों की मौज है।’’ सिमरन ने चिड़ियों को दाना खाते देख कर कहा, ‘‘हाँ, मैं भी चिड़िया बन जाती ती ठीक था।’’

‘‘ना, ना! यह क्या सोच रही हो ?’’ एक चिड़िया बोली, ‘‘एक-एक दाना ढूँढते-ढूँढते सारे दिन उड़ती हूँ मैं ।

घोंसला बनाने के लिए भी बहुत परिश्रम करना पड़ता है, और.....’’

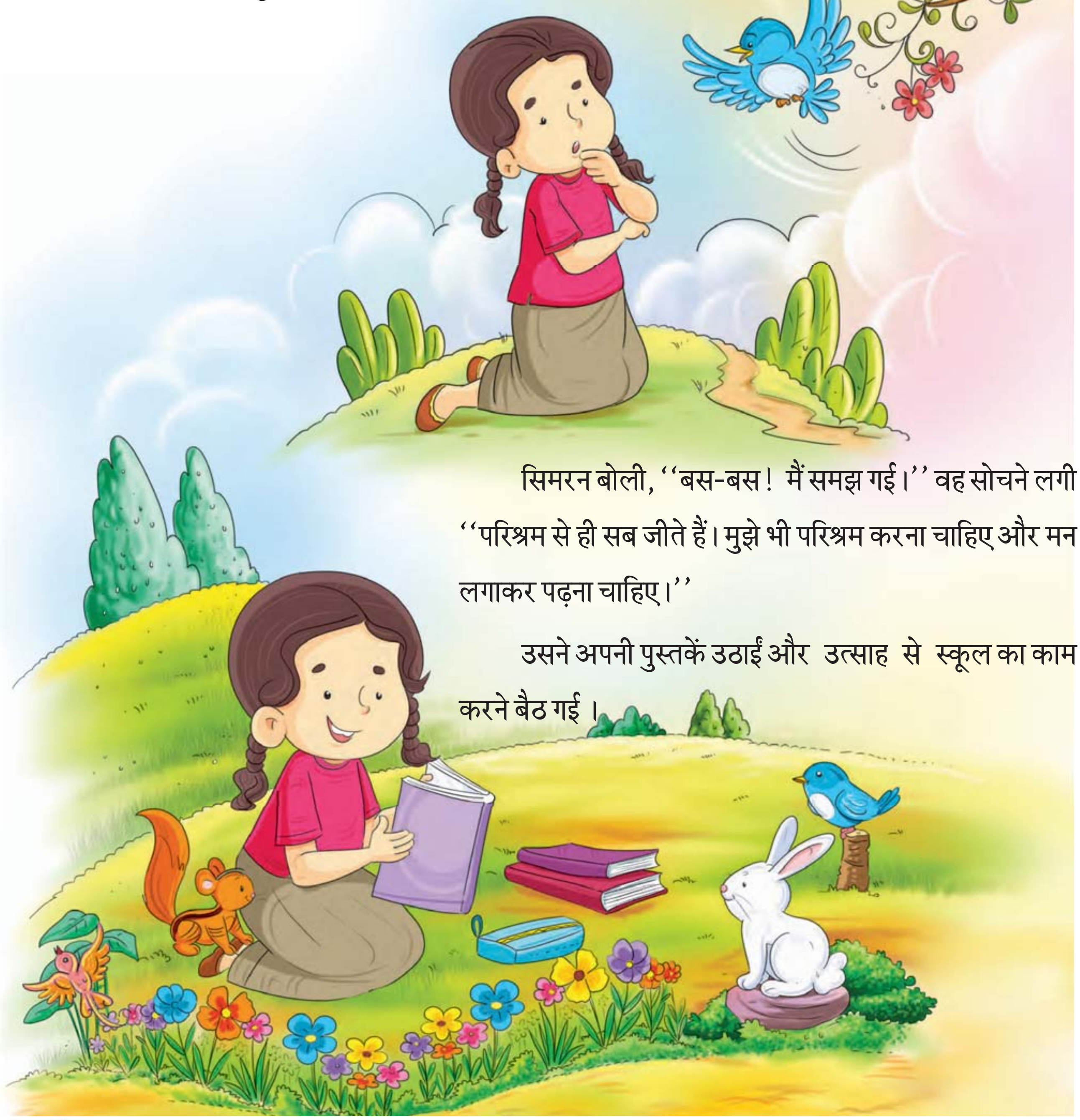

सिमरन बोली, ‘‘बस-बस! मैं समझ गई।’’ वह सोचने लगी ‘‘परिश्रम से ही सब जीते हैं। मुझे भी परिश्रम करना चाहिए और मन लगाकर पढ़ना चाहिए।’’

उसने अपनी पुस्तकें उठाईं और उत्साह से स्कूल का काम करने बैठ गई ।

शब्दार्थ

अचंभित - आश्चर्यचकित	इकट्ठा - एकत्रित
नन्हा - छोटा	अगर - यदि
कीड़ा - कीट	जड़ - मूल

बातचीत के लिए

1. आप क्या- क्या काम करते हैं ?
2. आपको कौन-कौन-से काम बहुत अच्छे लगते हैं ?
3. इस कहानी में आपको किसका काम सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

सोचिए और लिखिए

1. दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए -

(क) सिमरन क्यों थक गई थी ?

(ख) सिमरन मधुमक्खी क्यों बनना चाहती थी ?

(ग) पेड़ क्या-क्या काम करते हैं ?

(घ) सिमरन को चिड़िया क्यों अच्छी लगी ?

(ङ) आपके अनुसार सिमरन अंत में पुस्तकें उठाकर क्यों स्कूल का काम करने लगी ?

2. एक - एक वाक्य में उत्तर दीजिए :-

(क) कौन थक गई थी ?

(ख) मधुमक्खियाँ आनंदपूर्वक क्या कर रही थीं ?

(ग) कौन एक-एक दाना ढूँढती है ?

(घ) चिड़िया को क्या बनाने में बहुत परिश्रम करनी पड़ती है ।

(ङ) कौन एक जगह खड़ा रहता है ?

3. सही विकल्प चुनिए : -

(क) सिमरन पहले क्या बनना चाहती थी ?

A - पक्षी B - पेड़

C - खरगोश D - मधुमक्खी

(ख) कौन मिट्टी से पानी खींचता है ?

A - फल B - जड़

C - तना D - पत्ते

(ग) आखिर सिमरन क्या करना चाहती है ?

A - मन लगाकर पढ़ना B - चिड़िया की तरह उड़ना

C - पेड़ की तरह स्थिर रहना D - फूलों के साथ रहना

अनुमान और कल्पना

1. आप पूरे दिन क्या-क्या काम करते हैं, सूची बनाइए -

2. आपके घर में कौन-कौन से काम, किस-किसके द्वारा किए जाते हैं ?

रिक्त स्थानों में लिखिए-

काम	**करने वाला / करने वाली**
जैसे- पेड़-पौधों को पानी देना	माँ
____________________	______________
____________________	______________
____________________	______________
____________________	______________

3. मधुमक्खी एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर, उनसे रस लेकर शहद बनाती है । क्या आप बता सकते हैं कि शहद हमारे किस-किस काम आता है ? उदाहरण के अनुसार सोचकर लिखिए।

उदाहरण - दूध को मीठा करने के लिए

____

____

____

____

____

____

4. यदि आप अपनी इच्छा से एक दिन के लिए कुछ भी बन सकते तो आप क्या बनते ? और फिर क्या करते ? कल्पना कीजिए और लिखिए –

मैं एक ---------------------- बनता / बनती,

क्योंकि -------------------------------

भाषा - ज्ञान

1. कहनी में कुछ नाम वाले शब्द आए हैं। उन्हें ढूँढकर रिक्त स्थानों में लिखिए –

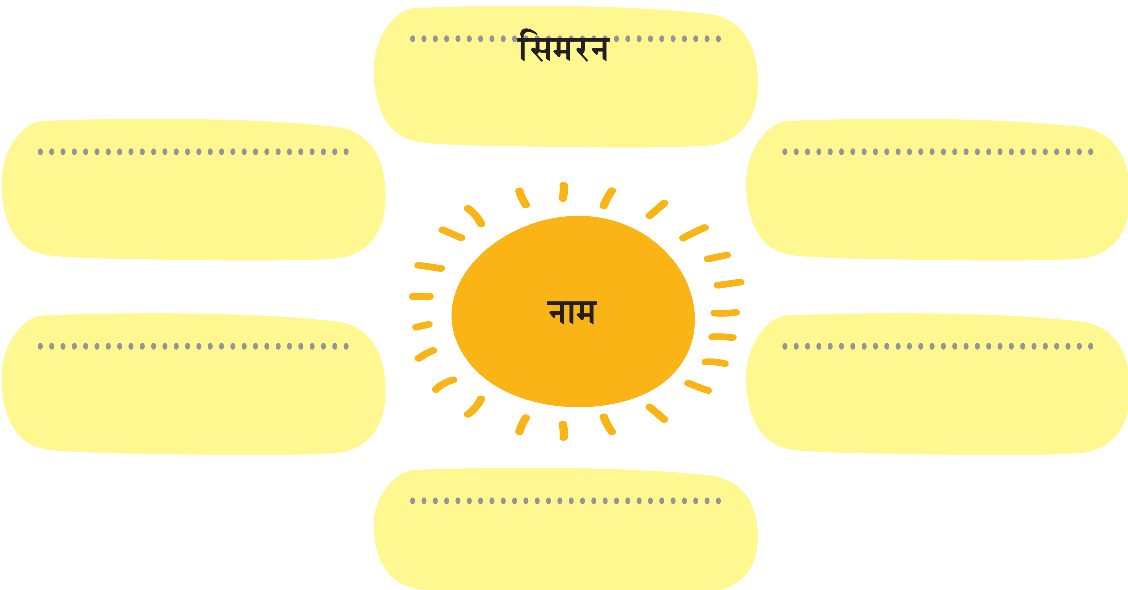

2. नीचे लिखे शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए-

फूल ________	दिन ________
सुख ________	सही ________
हँसना ________	बंद ________

3. नीचे लिखे शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए–

पुस्तक - ____________________

फूल - ____________________

परिश्रम - ____________________

चिड़िया - ____________________

पेड़ - ____________________

4. दोनों स्तंभों के समानार्थी शब्दों का मिलान कीजिए-

'क' स्तंभ	**'ख' स्तंभ**
बाग	कुसुम
पुस्तक	वृक्ष
फूल	बगीचा
पेड़	किताब

5. नीचे दिए गए उदाहरण को देखकर शब्द बदलिए -

मधुमक्खी	-	मधुमक्खियाँ
लड़की	-	------------
मछली	-	------------
नारी	-	------------
रानी	-	------------
कहानी	-	------------

6. नीचे लिखे उदाहरण को देखकर शब्द बदलिए-

कीड़ा	-	कीड़े
घोड़ा	-	------------
गधा	-	------------
बकरा	-	------------
केला	-	------------
बेटा	-	------------

3 आई वर्षा रानी

कविता

आई वर्षा रानी, आई वर्षा रानी
बिजली चमकी बादल गरजे
प्रकृति ने हरे चित्र सरजे
जीव- जगत को जीवन देने
दया मन में ठानी,
आई वर्षा रानी । (1)

कभी रिमझिम कभी झमाझम
बारिश होती कभी अविराम
आसमान में इंद्रधनुष की
शोभा है सुखदानी,
आई वर्षा रानी। (2)

सभी की प्यास मिट गई है
देखो कोपलें फूट गई हैं।
ताल-तलैया नदी-नालों में
भर गया है पानी,
आई वर्षा रानी । (3)

ता-थैया नाची कागज-नैया
चला खेत में किसान भैया
ज्यादा बारिश कभी -कभी तो
करती हैं मनमानी
आई वर्षा रानी। (4)

-डॉ. लक्ष्मीधर दाश

शब्दार्थ

प्रकृति - कुदरत	रिमझिम - हल्की बारिश	तलैया - छोटा तालाब
हरे चित्र - हरियाली	झमाझम - तेज बारिश	भाना - अच्छा लगना
ठानना - तय करना	अविराम - अनवरत	मनमानी- अपनी इच्छा से काम
सरजना - रचना करना	प्यास - तृषा	
सुखदानी - सुखदायी	कोपलें - नये पत्ते	

बातचीत के लिए

1. वर्षा आने से क्या होता है ?
2. हरियाली कहाँ छा जाती है ?
3. इंद्रधनुष कहाँ दिखाई पड़ता है ?
4. वर्षा ऋतु में कहाँ-कहाँ पानी भर जाता है ?
5. कौन खेत में जाता है ?

सोचिए और लिखिए

1. दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए -

(क) आसमान में बादल छा जाने के बाद क्या होता है ?

(ख) वर्षा के मन में क्यों दया आती है ?

(ग) आसमान में किसकी शोभा सुखदानी लगती है ?

(घ) 'सभी की प्यास मिट गई है'। वाक्य में 'सभी की' का प्रयोग किस-किसके लिए हुआ है ? सोच कर लिखिए।

(ङ) वर्षा कब मनमानी करती है ?

2. एक - एक वाक्य में उत्तर दीजिए :-

(क) किसे रानी कहा गया है ?

(ख) प्रकृति में हरियाली कब छा जाती है ?

(ग) झमाझम वर्षा का क्या अर्थ है ?

(घ) वर्षा होने से कहाँ कोपलें फूटती हैं ?

(ड) कागज की नैया कैसे नाचती है ?

3. विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए -

(क) वर्षा किसको जीवन देती है ?

(i) नदी-नालों को (ii) इन्द्रधनुष को

(iii) किसान को (iv) जीव-जगत को

(ख) वर्षा हो जाने पर पेड़ों में क्या फूटती हैं ?

(i) कोपलें (ii) फूल

(iii) कलियाँ (iv) फल

(ग) वर्षा होने के बाद क्या नाचती है ?

(i) प्रकृति (ii) प्यासी लताएँ

iii) कागज - नैया (iv) लकड़ी की नाव

(घ) इस कविता में कौन-सा भाव उभरकर सामने आता है ?

(i) निराशा (ii) प्रसन्नता (iii) क्रोध (iv) भय

अनुमान और कल्पना

1. अनुमान कीजिए कि वर्षा के अभाव में प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

2. वर्षा ऋतु में आपको क्या-क्या अच्छे लगते हें, उस पर चर्चा कीजिए।

3. वर्षा के आने से अनेक प्राकृतिक घटनाएँ घटती हैं। उन पर दोस्तों के साथ चर्चा कीजिए ।

4. वर्षा के आने पर पशु-पक्षी क्या अनुभव करते हैं आपस में उसकी चर्चा कीजिए।

5. नीचे दिए गए शब्दों में से कौन-कौन-से शब्द वर्षा ऋतु से जुड़े हैं। उन्हें रेखांकित कीजिए।

   धूप, ताप, बारिश, लू, जाड़ा, हिमपात, आँधी, सावन, ओस, तूफान, ठंड, उमस, रिमझिम, ठिठुरन, हरियाली, शीतलता, कोहरा, तपन,ओला ।

भाषा - ज्ञान

1. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

प्रकृति, हरियाली, दया, अविराम, आसमान

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से वाक्यों के खाली स्थान भरिए :-

(झमाझम, तलैया, किसान, बादल, कोपलें)

(क) वर्षा ऋतु में आसमान में ________ गरजते हैं ।

(ख) कभी-कभी ________ बारिश होती है।

(ग) वर्षा-जल पाकर वृक्षों में ________ फूटती हैं।

(घ) ________ वर्षा-जल से भर जाती है।

(ङ) बारिश हो जाने के बाद ________ खेत में हल चलाता है।

3. ताल-तलैया की तरह युग्म शब्द बनाइए -

नदी - ______, घास - ______, भूख - ______, पेड़ - ______,

सुख - ______, बाग - ______, दिन - ______,

4. नीचे दिए गए उदाहरण देखकर शब्दों के रूप बदलिए।

ऋतु - ऋतुएँ	कोपल - कोपलें
झाड़ू - ________	नहर - ________
गौ - ________	दाल - ________
बहू - ________	नस - ________

5. नीचे लिखे विपरीत अर्थ वाले शब्दों का मिलान कीजिए –

'क'	'ख"
जीवन	धरती
आसमान	निर्दयता
पानी	आया
गया	आग
दया	मरण

6. गोले में दिए शब्दों के कुछ समानार्थक शब्द लिखिए -

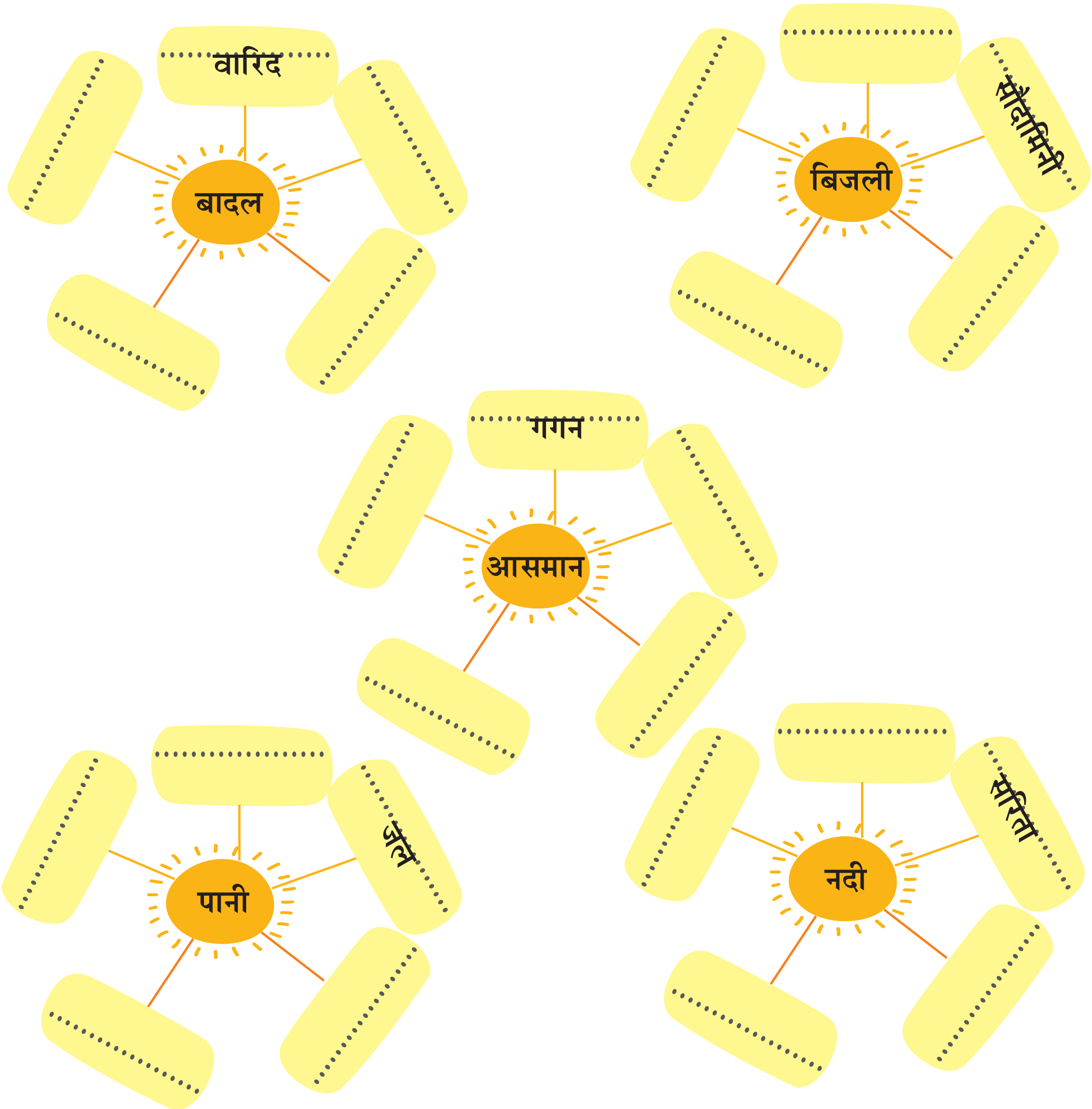

इकाई-2

4

आसमान गिरा

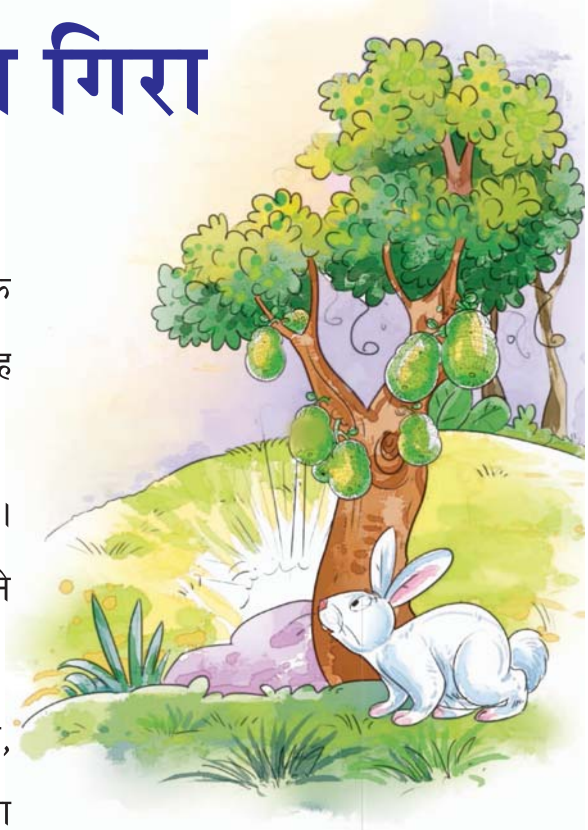

कहानी

एक खरगोश था। वह पेड़ के नीचे सो रहा था। अचानक जोर की आवाज हुई - धम्म ! खरगोश चौंक कर उठ गया। वह बोला, ''अरे ! क्या गिरा ?''

खरगोश ने इधर-उधर देखा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे लगा, आसमान गिर रहा है। खरगोश डर गया और भागने लगा ।

भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली। उसने पूछा, ''खरगोश भाई, कहाँ भागे जा रहे हो ? ज़रा सुनो तो।'' खरगोश भागते-भागते बोला ''आसमान गिर रहा है, भागो ! भागो ! जल्दी भागो !''

लोमड़ी भी भागने लगी । आगे जाकर उन्हें एक भालू मिला। भालू बोला, ''ठहरो, ठहरो ! कहाँ भागे जा रहे हो ?'' खरगोश और लोमड़ी बोले ''भागो ! तुम भी भागो ! आसमान गिर रहा है।'' भालू भी उनके साथ भागने लगा । खरगोश, लोमड़ी और भालू भागते-भागते एक हाथी के पास से निकले। हाथी बोला, ''अरे ! सब क्यों भागे जा रहे हो ? ठहरो, कुछ बताओ तो।''

भालू बोला, ''आसमान गिर रहा है, तुम भी भागो ।'' हाथी भी भागने लगा। सब भाग रहे थे। आगे-आगे खरगोश, उसके पीछे लोमडी, उसके पीछे भालू और सबसे पीछे हाथी । भागते-भागते उन्हें शेर मिला । उसने पूछा, ''तुम सब क्यों भागे जा रहे हो ?''

हाथी बोला, ''आसमान गिर रहा है। तुम भी भागो!'' शेर ने दहाड़ कर कहा, ''आसमान गिर रहा है! कहाँ गिर रहा है ? रुको।'' यह सुनकर सभी जानवर रुक गए। शेर ने पूछा, ''किसने कहा आसमान गिर रहा है ?'' हाथी बोला, ''भालू ने कहा।'' भालू बोला, ''मुझे तो लोमड़ी ने कहा ।''

लोमड़ी बोली, ''मुझसे तो खरगोश ने कहा..... सबसे पहले इसी ने कहा था।'' खरगोश चुप रहा । शेर बोला, ''कहो खरगोश! कहाँ गिर रहा है आसमान ?'' खरगोश ने कहा, ''मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।''

शेर ने कहा, ''चलो, चलकर देखें।''

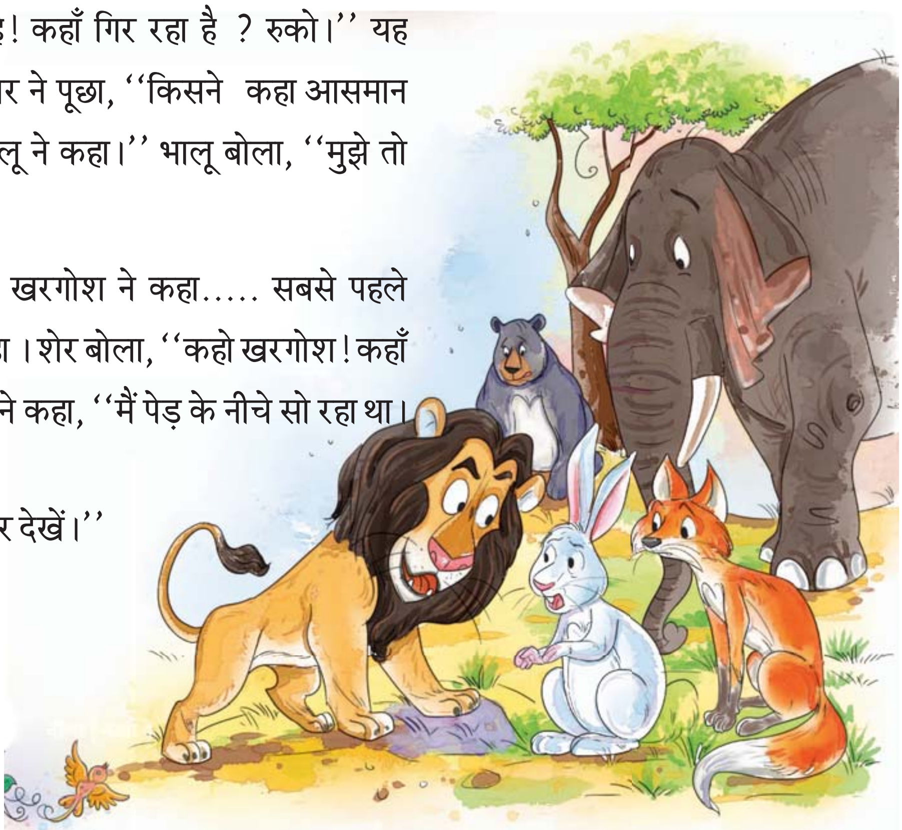

वे सब उस पेड़ के नीचे गए। सबने पेड़ के नीचे देखा वहाँ एक बड़ा सा फल गिरा पड़ा था । तभी वैसा ही एक और फल गिरा - धम्म ! खरगोश चौंक गया। शेर बोला, ''तो यही तुम्हारा आसमान था । लो फिर आसमान गिरा । भागो !'' और सभी हँसने लगे ।

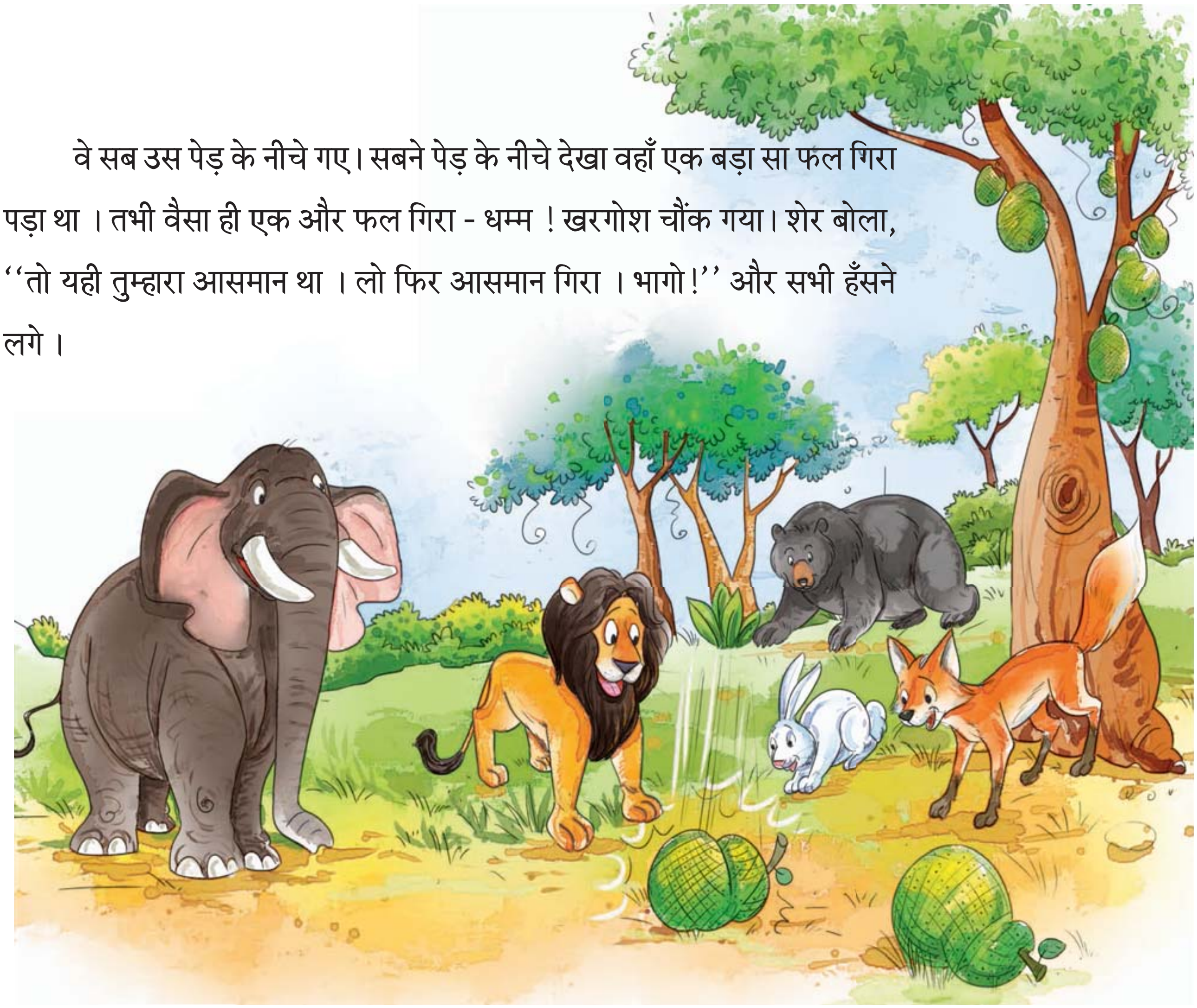

शब्दार्थ

आवाज - शब्द	दहाड़ - गर्जन
ठहरो - रुको	चौंकना - चकित होना

बातचीत के लिए

1. खरगोश को ऐसा क्यों लगा कि आसमान गिर रहा है ? यदि आप खरगोश के स्थान पर होते तो क्या करते ?
2. क्या आपने कभी आसमान से किसी वस्तु को गिरते हुए देखा है ? अपने-अपने अनुभव साझा कीजिए ।
3. यदि आप शेर के स्थान पर होते तो खरगोश को किस प्रकार समझाते ? कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. इस कहानी से मिलती-जुलती कोई दूसरी घटना या कहानी कक्षा में सुनाइए ।

सोचिए और लिखिए

1. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए -

(क) इस कहानी में कई पशुओं का उल्लेख है । उनके नाम कहानी के क्रम से लिखिए ।

(ख) ''आसमान गिर रहा है, भागो ! भागो ! जल्दी भागो !'' खरगोश की यह बात सुनकर आपके अनुसार पशुओं को क्या करना चाहिए था ?

(ग) कहानी में आपको कौन सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

(घ) यदि शेर भी भगदड़ में शामिल हो जाता और प्रश्न न पूछता तो क्या होता ?

2. एक -एक वाक्य में उत्तर दीजिए-

(क) खरगोश कहाँ सो रहा था ?

(ख) खरगोश क्यों चौंक उठा ?

(ग) आवाज सुनकर खरगोश ने क्या किया ?

(घ) शेर हाथी से क्या कहा ?

(ङ) सभी जानवर क्यों हँसने लगे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उचित उत्तर पर सही चिहन (✔) लगाइए -

(क) डरकर भागते हुए खरगोश को सबसे पहले कौन मिला ?

(i) लोमड़ी

(ii) शेर

(iii) भालू

(iv) हाथी

(ख) हाथी ने जब शेर से कहा कि आसमान गिर रहा है, तब शेर ने क्या किया ?

(i) बात सुनकर चला गया ।

(ii) वह मुस्कुराने लगा ।

(iii) वह भी सबके साथ भागने लगा ।

(iv) उसने सबको रोककर प्रश्न पूछा ।

(ग) ''तो यही तुम्हारा आसमान था । लो फिर आसमान गिरा। भागो।'' यह कथन किसका है ?

(i) हाथी (iii) भालू

(ii) लोमड़ी (iv) शेर

(घ) आपके अनुसार खरगोश के आस पास कौन-सा फल गिरा होगा ?

(i) कद्दू (iii) तरबूज

(ii) कटहल (iv) पपीता

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना कीजिए कि यदि खरगोश के स्थान पर शेर और शेर के स्थान पर खरगोश होता तो क्या होता ? अपनी कहानी बनाइए और कक्षा में सहपाठियों को सुनाइए ।

2. कहानी में खरगोश कुछ गिरने की आवाज सुन कर घबरा गया। यदि ऐसी ही आवाज हाथी ने सुनी होती तो क्या वह भी इतना घबराता ? सोचिए और अपनी बात सहपाठियों को सुनाइए ।

3. यदि खरगोश के स्थान पर कौआ चौंक जाता और उड़ने लगता तो उसे रास्ते में कौन-कौन मिलते और वह उनसे क्या-क्या कहता ? कल्पना कीजिए और एक कहानी सुनाइए ।

भाषा - ज्ञान

1. निम्नलिखित पंक्तियों को नीचे दिये गए उचित विराम-चिह्नों की सहायता से पूरा कीजिए-

,   ?   !   ।

(क) अरे इतना बड़ा हाथी

(ख) मैंने खरगोश लोमड़ी भालू और शेर जंगल में देखे हैं

(ग) ये पुस्तकें किसकी हैं

(घ) वाह कितने सुंदर फूल हैं

2. कहानी में एक कथन आया है -

''भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली।'' इस वाक्य में 'भागते-भागते' शब्द-युग्म का प्रयोग हुआ है । अब निम्नलिखित शब्द-युग्मों की सहायता से एक-एक वाक्य लिखिए–

(क) चलते-चलते -

(ख) कभी-कभी -

(ग) हँसते-हँसते -

(घ) जाते-जाते -

3. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और दिए गए उदाहरण के अनुसार प्रश्न बनाइए-

उदाहरण- भागते- भागते उन्हें शेर मिला।

यहाँ 'कौन' का प्रयोग करते हुए प्रश्न बनेगा -

भागते-भागते उन्हें कौन मिला ?

(क) खरगोश पेड़ के नीचे सो रहा था ।

(ख) खरगोश भागते-भागते बोला ।

(ग) वहीं धम्म से आसमान गिरा

(घ) खरगोश ने लोमड़ी से कहा, ''मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।

कौन

कब

कैसे

क्या

4. नीचे दिए गए शब्दों में मात्रा लगाकर और मात्रा हटा कर नए-नए शब्द बनाइए । उदाहरण के अनुसार इन शब्दों से वाक्य बनाइए-

(i) **उदाहरण - मात्रा लगाकर**

बस → बीस

(क) यह - --------------------

(ख) भर - --------------------

(ग) रह - --------------------

(घ) फल - --------------------

(ii) **उदाहरण - मात्रा हटाकर**

चला → चल

(क) कही --------------------

(ख) पढ़ी --------------------

(ग) सेब --------------------

(घ) कुल --------------------

5. नीचे लिखे शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए -

(क) नीचे - --------------------

(ख) पीछे - --------------------

(ग) बड़ा - --------------------

(घ) उठना - --------------------

6. स्तंभ- मिलान कीजिए-

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
शेर	मादा भालू
हाथी	मादा खरगोश
भालू	हिरनी
खरगोश	हथिनी
हिरन	शेरनी

7. उदाहरण देखकर वाक्य बदलिए-

उदाहरण -खरगोश ने देखा। खरगोश देखता है।

भालू ने कहा । --------------------

छात्र ने पूछा। --------------------

बालक ने लिखा। --------------------

बालिका ने पढ़ा। --------------------

8. उदाहरण देखकर वाक्य बदलिए -

आसमान गिर रहा है।	आसमान गिरा।
खरगोश भाग रहा है।	--------------------
हाथी बोल रहा है।	--------------------
लड़का हँस रहा है।	--------------------
भालू दौड़ रहा है।	--------------------

5 रथयात्रा

सिर्फ पढने के लिए

हमारे जीवन में त्योहारों का बहुत महत्व है। ये हमारे मन में अपार हर्ष-उल्लास भर देते हैं । हम ओड़िशा में रथयात्रा, दीवाली, दशहरा, जन्माष्टमी, राम नवमी, रजोत्सव, नूआँ खाई, शीतल षष्ठी आदि त्योहार मनाते हैं। उनमें रथयात्रा विश्वप्रसिद्ध त्योहार है।

रथयात्रा के दिन श्रीक्षेत्र पुरी के श्रीमंदिर से चारों विग्रह श्री बलभद्र, श्री जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और चक्रराज सुदर्शन भक्तों को दर्शन देने हेतु तीन रथों पर विराजमान होकर गुंडिचा मंदिर में जाते हैं। तालध्वज रथ पर श्री बलभद्र, दर्पदलन रथ पर देवी सुभद्रा तथा श्री सुदर्शन और नंदीघोष रथ पर श्री जगन्नाथ जी विराजमान होते हैं। आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि में श्री जगन्नाथ जी की विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा का आयोजन होता है।

पहले पहंडि बिजे कराके विग्रहों को श्री मंदिर के रत्न सिंहासन से लाकर रथ पर बिठाया जाता है। पहंडि के समय शंख, घंटा, ढोल, झाँझ - मंजीरों की आवाज के साथ हुलहुलि और हरिबोल की ध्वनि से चारों ओर प्रकंपित

हो जाता है। सुसज्जित रथ पर पूजार्चना नीति संपन्न की जाती है। उसके बाद पुरी के गजपति महाराजा पालकी पर सवार होकर आते हैं। वे सोने की मूँठवाली झाड़ू से तीनों रथों को बुहारते हैं। इस नीति को 'छेरा-पहँरा' कहते हैं।

छेरा-पहँरा के बाद एक-एक करके तीनों रथ गुंडिचा मंदिर की ओर बढ़ने लगते हैं। पहले श्री बलभद्र जी का तालध्वज रथ आगे बढ़ता है। उसके पीछे देवी सुभद्रा जी का दर्पदलन और अंत में श्री जगन्नाथ जी का नंदीघोष रथ चल पड़ता है। हजारों लोग रथ की रस्सी को खींचकर इसे गुंडिचा मंदिर की ओर ले जाते हैं। इसलिए इसे गुंडिचा यात्रा भी कहते हैं। रथयात्रा का मनोरम दृश्य उपभोग करने के लिए लाखों श्रद्धालु पुरी में उपस्थित होते हैं।

पुराण के वर्णन के अनुसार राजा इंद्रद्युम्न ने श्री जगन्नाथ मंदिर की प्रतिष्ठा की थी। उनकी रानी गुंडिचा देवी के नाम पर गुंडिचा मंदिर बना है। तीनों रथ वहाँ तक जाते हैं । मंदिर के पास रथ पहुँचने के अगले दिन तीनों विग्रहों को 'आड़प मंडप' ले जाया जाता है। वहाँ श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र, देवी सुभद्रा और श्री सुदर्शन सात दिन अवस्थान करते हैं। फिर गुंडिचा मंदिर से श्रीमंदिर को वापस लौटने की यात्रा शुरू होती है। इसे 'बाहुड़ा-यात्रा' कहते हैं।

तीनों रथ सिंह द्वार पर पहुँचने के बाद रथों पर कई नीतियाँ आयोजित की जाती हैं। उनमें से सबसे प्रसिद्ध है, 'सोना - वेश' या 'स्वर्ण वेश'। बाहुड़ा-यात्रा के अगले दिन शाम को श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र और देवी सुभद्रा को सोने के आभूषणों से सजाया जाता है। इस मनमोहक सोना-वेश को दर्शन करने लाखों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है। फिर अगले दिन 'अधर पणा' की नीति संपन्न होती है।

रथयात्रा शुरू होने के बारहवें दिन श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र और देवी सुभद्रा के साथ सुदर्शन जी श्रीमंदिर में प्रवेश करके रत्न सिंहासन पर विराजमान होते हैं। यह परंपरा 'नीलाद्रि बिजे' के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा सिर्फ पुरी में ही सीमित नहीं है। ओड़िशा और इसके बाहर अनेक जगहों पर भी रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। पुरी के अलावा ओड़िशा के बारिपदा, ढेंकानाल, केंद्रापड़ा, रणपुर, नीलगिरि, संबलपुर, कोरापुट, केंदुझर आदि जगहों पर रथयात्रा बहुत प्रसिद्ध है। अब तो विदेशों में भी रथयात्रा का आयोजन बड़े धूमधाम से किया जाता है। आज रथयात्रा सिर्फ ओड़िशा का ही नहीं बल्कि समूचे विश्व का महोत्सव बन गया है।

- डॉ. अजित प्रसाद महापात्र

कुछ विशेष जानकारियाँ

- श्री जगन्नाथ जी का मंदिर – श्रीमंदिर
- श्री जगन्नाथ मंदिर का झंडा – पतितपावन झंडा
- श्री मंदिर का प्रसाद – महाप्रसाद (अबढ़ा)
- श्री जगन्नाथ जी का सिंहासन – रत्नसिंहासन
- पुरी का दांड (लंबी और चौड़ी सड़क) – बड़दांड
- पुरी जगन्नाथ मंदिर का चक्र – नीलचक्र
- पुरी के बड़े ठाकुर – श्री बलदेव जीऊ
- पुरी के पास उदधि – महोदधि
- श्री जगन्नाथ मंदिर के भीतर का वट वृक्ष – कल्पवट
- श्री जगन्नाथ मंदिर का दीप – महादीप
- श्री जगन्नाथ मंदिर का प्राचीर – मेघनाद प्राचीर

6

बया हमारी चिड़िया रानी

कविता

बया हमारी चिड़िया रानी
तिनके लाकर महल बनाती,
ऊँची डाली पर लटकाती,
खेतों से फिर दाना लाती,
नदियों से भर लाती पानी ।

तुझको दूर न जाने देंगे,
दानों से आँगन भर देंगे,
और हौज में भर देंगे हम,
मीठा-मीठा ठंडा पानी ।

फिर अंडे सेयेगी तू जब,
निकलेंगे नन्हें बच्चे तब,
हम आकर बारी-बारी से,
कर लेंगे उनकी निगरानी ।

फिर जब उनके पर निकलेंगे,
उड़ जाएँगे बया बनेंगे,
हम तब तेरे पास रहेंगे,
तू मत रोना चिड़िया रानी ।

–महादेवी वर्मा

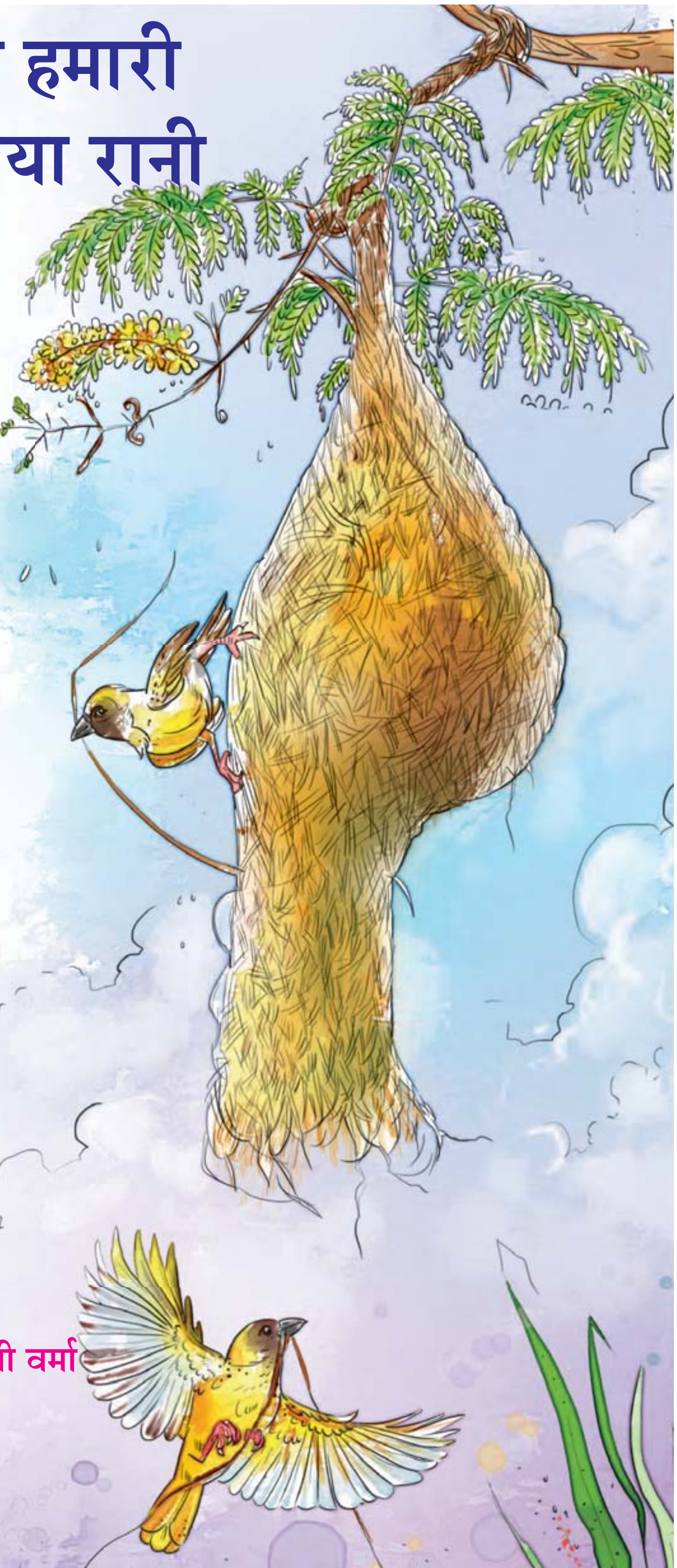

Reprint 2025-26

शब्दार्थ

तिनका - सूखी घास, तिल्ली	निगरानी - देख-रेख
हौज - जलाशय, पानी का कुंड	नन्हा - छोटा

बातचीत के लिए

(क) चित्र में आपको क्या-क्या दिखाई दे रहा है ?

(ख) यह किस पक्षी का घोंसला है ?

(ग) आपके अनुसार घोंसले में बैठी बया रानी क्या सोच रही होगी ?

(ध) चिड़िया अपना घर बनाने के लिए तिनके कहाँ से लाती होगी ?

(ङ) आपने कौन - कौन से पक्षियों के घोंसले देखे हैं ?

सोचिए और लिखिए

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए।

(क) चिड़िया अपने लिए किन-किन चीजों की व्यवस्था करती है ?

(ख) कवयित्री चिड़िया को अपने से दूर न जाने देने के लिए क्या-क्या करना चाहती हैं ?

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) बया रानी अपना घोंसला कहाँ लटकाती है ?

(ख) चिड़िया के बच्चों की निगरानी कौन करेंगे ?

(ग) पर निकल आने पर चिड़िया के बच्चे क्या करेंगे ?

3. कविता के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनें।

क) चिड़िया तिनका लाकर क्या करती है ?

अपना महल बनाती है ☐ पेड़ पर रखती है ☐

खुशी से उड़ती है ☐ तिनके को खा जाती है ☐

ख) चिड़िया रानी क्यों रोएगी ?

क्योंकि उसके बच्चे दाने चूगेंगे। ☐

क्योंकि उसके बच्चे भी रोएँगे। ☐

क्योंकि उसके बच्चे भी महल बनाएंगे। ☐

क्योंकि उसके बच्चे उसे छोड़कर उड़ जाएँगे। ☐

4. कविता में आए शब्दों को खोजकर उन पर घेरा लगाइए।

दा	ना	सी	डा	ली	था	नि
पी	जी	खा	भू	ही	पे	ग
व	घी	ती	मै	ऊँ	शा	रा
चि	ठं	डा	क्षी	ची	पा	नी
ड़ि	हौ	ज	धों	थे	वी	अं
या	ति	न	का	जा	खे	डा

अनुमान और कल्पना

1. **नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए।**

    (क) कल्पना कीजिए कि चिड़िया तिनके से घोंसला बनाती है वहीं अंडे देती है। जब अंडे को सेती होगी तब वह अपने लिए दाना-पानी का बंदोबस्त कहाँ से करती होगी ?

    (ख) मान लीजिए कि चिड़िया घोंसले में अंडे सेने बैठी है। अचानक मुसलाधार बारिश होने लगी तो चिड़िया क्या करेगी ?

2. **पढ़िए, समझिए और रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

बया रानी के काम	आपके काम
दाना लाना	विद्यालय के लिए तैयार होना
______________	______________
______________	______________
______________	______________
______________	______________

भाषा - ज्ञान

1. **नीचे दिए गए शब्दों को उलटकर लिखिए और नए शब्दों का आनंद लीजिए–**

    नदी - दीन

    बस - ------------

    दबा - ------------

खीरा - ------------

नीरा - ------------

रीना - ------------

2. नीचे लिखे शब्दों को उसके विपरीत अर्थ वाले शब्दों के साथ मिलान कीजिए–

दूर	नीची
ऊँची	निकट
रोना	गर्म
ठंडा	हँसना

3. नीचे दिए गए एक वचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

तिनका - तिनके

दाना - ....

अंडा - ....

बच्चा - ....

4. अनुस्वार (ं) और चंद्रबिंदु (ँ) वाले दो- दो शब्द लिखिए-

जैसे

हंस	**चाँद**
....	....
....	....

5. समान अर्थ वाले शब्द के साथ मिलान कीजिए -

'क'	'ख'
महल	शाखा
डाली	जल
नदी	घर
पानी	पंख
पर	तटिनी

6. 'ऊँची डाली' शब्द - युग्म में दो शब्द आए हैं। डाली के पहले ऊँची आने से यह सही लगता है। नीचे ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनके पहले कौन-से शब्द आएँगे लिखिए-

--------------- पानी (मीठी, सफेद, ठंडा)

--------------- बच्चे (नन्हें, काला, छोटा)

--------------- लड़का (पतली, बड़े, होनहार)

--------------- किताब (नई, नया, पुराने)

--------------- पेड़ (झूकी, पुरानी, लंबा)

7. उदाहरण को देखकर वाक्य बदलिए -

तुझको जाने देते हैं – तुझको जाने देंगे

हम निगरानी करते हैं – ---------------

हम तेरे पास रहते हैं – ---------------

हम हौज में पानी भर देते हैं – ---------------

इकाई-3

7

कवि यदुमणि

निबंध

अंग्रेजी हुकूमत के समय ओड़िशा में छब्बीस रियासतें थीं। उनमें से नयागढ़ और खंडपड़ा का नाम उल्लेखनीय है । उन दोनों रियासतों के राजाओं में सगे भाई जैसी गाढ़ी मित्रता थी। एक बार खंडपड़ा के राजा नृसिंह मर्दराज भ्रमरवर राय ने राजगिरि पहाड़ की तलहटी में एक वनभोज का आयोजन किया था। उसमें योगदान करने के लिए उन्होंने नयागढ़ के राजा विनायक सिंह मांधाता को आमंत्रित किया था।

वनभोज के दिन दोनों राजा सजधज के साथ की भोज के स्थान की ओर जा रहे थे। खंडपड़ा के राजा हाथी पर सवार होकर पहाड़ के ऊपरी रास्ते से हो कर जा रहे थे। उसी समय नयागढ़ के राजा पहाड़ की तलहटी के रास्ते से पालकी में बैठकर जा रहे थे ।

दोनों राजाओं में छोटे-बड़े होने का भाव तो नहीं था, लेकिन उनकी प्रजाएँ अपने - अपने राजा को अत्यधिक महत्व देती थीं। अचानक खंडपड़ा के राजा के दरबारी कवि ने संस्कृत में एक श्लोक बोलकर खंडपड़ा राजा की महानता और श्रेष्ठता प्रतिपादित की। नयागढ़ की प्रजाओं के कानों में यह बात पड़ी । उनमें यदुमणि भी थे। वे क्या पंडितजी को आसानी से छोड़ देते ? उन्होंने गला झाड़कर गाया ।

''तराजू देखो, क्या मति गई मारी

नीचे आ गया, जो पलड़ा भारी ।''

यह सुनकर खंडपड़ा की तरफ से और कोई प्रतिक्रिया नहीं रखी गई । खंडपड़ा के राजा ऊपर का रास्ता छोड़कर नीचे के रास्ते पर आए। दोनों राजा हँसी-खुशी बातें करते हुए वनभोज के स्थान की ओर चल पड़े ।

असल में यदुमणि आशु कवि के रूप में जाने जाते थे। वे अपनी अप्रतिम प्रतिभा के बल पर किसी भी बात को हास्य और व्यंग्य शैली में प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर सकते थे। इसलिए वे सभी के प्रिय थे।

उनका जन्म आठगढ़ पाटणा में 8 जनवरी 1781 ई. को हुआ था । उनके माता-पिता पुत्र-प्राप्ति हेतु भगवान यदुकृष्ण की आराधना की थी। पुत्र-जन्म के बाद उन्होंने बच्चे का नाम रखा यदुमणि। उनके पिता मुकुंद महापात्र आठगढ़ के राज दरबार में चित्रकार और स्थपति थे । उनकी माता शोभादेवी सुललित कंठ में छांद, चौपदी और गीत गाकर बेटे को सुनाती थी । बालक यदुमणि पर इसका गहरा असर पड़ा था। यदुमणि की पत्नी का नाम था – खंजना। बाद में यदुमणि आजीविका के लिए नयागढ़ के इटामाटी गाँव में आकर बस गए। वे बढ़ई थे और लकड़ी का काम करके अपनी आजीविका चलाते थे। बीच-बीच में आशु कविताएँ रचना करके श्रोताओं की प्रशंसा प्राप्त कर लेते थे।

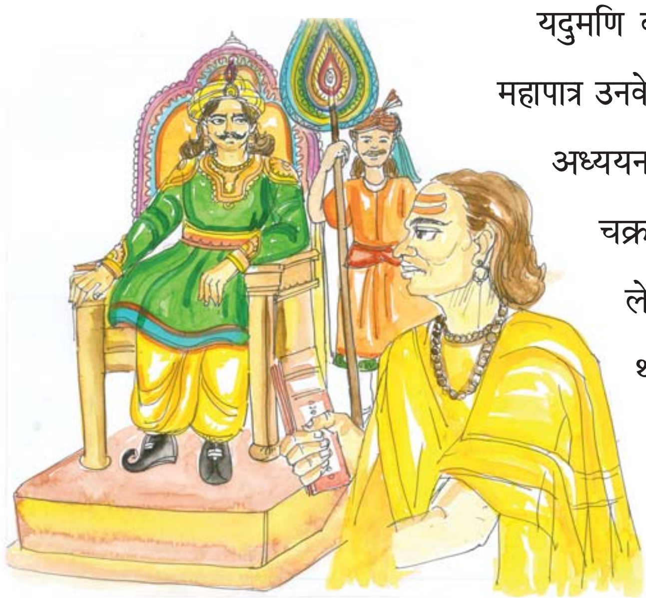

यदुमणि को अध्ययन में बहुत रुचि थी । पंडित विद्याधर महापात्र उनके संस्कृत के गुरु थे। यदुमणि ने घर पर ही शास्त्र-अध्ययन करके अपने ज्ञान की सीमा बढ़ाई थी। वक्रवाक् चक्रपाणि पट्टनायक ने उन्हें नयागढ़ के राज दरबार में लेकर राजा विनायक सिंह मांधाता से परिचित कराया था। तब से वे अपनी रचनाओं के बल पर नयागढ़ राजा के प्रिय बन गए थे ।

यदुमणि बहमुखी प्रतिभा-संपन्न कवि थे । 'राघव विलास' और 'प्रबंध पूर्णचन्द्र' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं ।

इनके अलावा उन्होंने अनेक चौ-पदियाँ, छोटी-छोटी कविताएँ लिखी हैं। उन्होंने खंडपड़ा और नयागढ़ के राजाओं की प्रशस्ति में भी अनेक कविताएँ लिखी हैं। उनकी कविताओं में व्यंग्य और हास्य रस भरे रहते हैं। वे सत्य का आदर करते थे । निष्पक्ष रहकर अपना विचार रखते थे। यहाँ तक कि वे राजा से भी नहीं डरते थे । इसलिए वे 'उत्कल घंट' कहलाते थे। उनका निधन 2 जुलाई, 1866 को हुआ था । इसके साथ नयागढ़ सहित समग्र ओड़िशा से एक देदीप्यमान प्रतिभा का अंत हो गया ।

–पद्मिनी परिड़ा

शब्दार्थ

हुकूमत - शासन	तलहटी - पहाड़ के नीचे की भूमि
रियासत-देशीय राज्य	आराधना-पूजा
सज-धज - आडंबर	चौपदी - चार-चार पदों का समूह
आशु -जल्दी, तत्काल	प्रतिभा - विलक्षण बुद्धि
सगे भाई - एक ही माँ से जन्मे भाई	निष्पक्ष- किसी का पक्ष न लेना
महानता - श्रेष्ठता	प्रशस्ति- प्रशंसा, सराहना ।
अप्रतिम - अतुलनीय	देदीप्यमान- उज्वल, चमकदार
बहुमुखी - सर्वांगीण	मति मारी जाना - बुद्धि भ्रष्ट होना
उज्वल - चमकदार	

बातचीत के लिए

1. नयागढ़ और खंडपड़ा के राजाओं का नाम क्या था ?
2. वे पहाड़ की तलहटी से होकर क्यों जा रहे थे ?
3. किसने खंडपड़ा के राजा की श्रेष्ठता प्रतिपादित की ?
4. यदुमणि के पिता और माता का नाम क्या था ?

सोचिए और लिखिए

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए -

(क) ओड़िशा में कितनी रियासतें थीं ? किन्हीं दो रियासतों के नाम लिखिए।

(ख) खंडपड़ा के राजा और नयागढ़ के राजा वनभोज के लिए कैसे जा रहे थे ?

(ग) यदुमणि ने एक पद गाकर खंडपड़ा वालों को क्यों सुनाया ?

(घ) यदुमणि इटामाटी क्यों आए ?

(ङ) यदुमणि नयागढ़ राजा के प्रिय कैसे बने ?

(च) यदुमणि ने क्या-क्या रचनाएँ की थीं ?

(छ) यदुमणि क्यों 'उत्कल घंट' कहलाते थे ?

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए -

(क) वनभोज का आयोजन कहाँ हुआ था ?

(ख) दोनों राजाओं के बीच संबंध कैसा था ?

(ग) नयागढ़ के राजा किस रास्ते से जा रहे थे ?

(घ) मुकुंद महापात्र क्या काम करते थे ?

ङ) यदुमणि ने किससे संस्कृत पढ़ी थी ?

च) किसने यदुमणि को नयायढ़ राजा से परिचित कराया था ?

छ) यदुमणि की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन-सी हैं ?

3. दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनकर लिखिए -

(क) अंग्रेज हुकूमत के समय नयागढ़ क्या था ?

(i) जिला (ii) राज्य

(iii) परगना (iv) रियासत

(ख) खंडपड़ा के राजा किस पर बैठ कर जा रहे थे ?

(i) हाथी की पीठ पर (ii) घोड़े पर सवार होकर

(iii) पालकी में बैठकर (iv) कार में बैठ कर

(ख) मुकुंद महापात्र कैसे आजीविका चलाते थे ?

(i) चित्र और मूर्तियाँ बनाकर (ii) खेती-बारी से

(iii) दरबार में गीत लिखकर (iv) ठेले पर माल बेच कर

(घ) इनमें से कौन-सी रचना यदुमणि की है ?

(i) वैदेहीश विलास (ii) प्रबंध विलास

(iii) राघव विलास (iv) पूर्णचंद्र भाषा-कोश

अनुमान और कल्पना

1. यदुमणि के हास्यरसात्मक कथन सुनकर लोग खुश हो जाते थे। आप ऐसे कथनों का संग्रह करके सहपाठियों को सुनाइए और उनका मजा लीजिए।
2. यदुमणि का चित्र संग्रह करके उसके नीचे 'उत्कल घंट' लिख कर कक्षा की दीवार पर चिपकाएँ। कल्पना कीजिए उनकी उपस्थित बुद्धि कितनी तेज थी, क्या आप भी अपनी ऐसी बुद्धि का प्रयोग कभी करते हैं।
3. आपके द्वारा सुने गए चुटकुले मित्रों को सुनाइए और उनका आनंद लीजिए।
4. ओड़िशा की रियासतों के नाम ढूँढकर लिखिए।

भाषा - ज्ञान

1. नीचे दिए गए उदाहरण को देखकर उस प्रकार नए शब्द बनाइए। उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

पहले जोड़ागया अंश	मूल शब्द	नया शब्द	वाक्य में प्रयोग
नि	धन	निधन -	आज उनका निधन हो गया।
वि	ग्रह		....
प्र	बंध		....
प्र	भाव		....

2. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उदाहरण को देख कर युग्म शब्द बनाइए-

हँसी - खुशी

रहन - ....

भाग - ....

खून - ....

आमने - ....

आस - ....

चाल - ....

देख - ....

3. आपके इस पाठ में एक शब्द आया है- 'चौपदी' इसका अर्थ है – चार पदों का समूह। इस प्रकार के कुछ शब्द दिए गए हैं। इनके अर्थ लिखिए -

पंचवटी - ....

चतुर्भुज - ....

षडरस - ....

सप्ताह - ....

त्रिफला - ....

4. नीचे दिए गए शब्दों से सार्थक वाक्य बनाइए -

हुकूमत - ....

तलहटी - ....

आमंत्रित - ....

श्रेष्ठता - ....

प्रतिभा - ....

5. **नीचे दिए गए शब्दों में मात्रा लगाकर या हटाकर नए-नए शब्द बनाइए -**

जैसे : राजा - रोज

हाथी - ---------------

कान - ---------------

मत - ---------------

देवा - ---------------

6. **नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। उदाहरण को देखकर वाक्य परिवर्तन कीजिए –**

राजा ने भोज का आयोजन किया ।

राजा भोज का आयोजन करेंगे ।

(i) उन्होंने राजा की महानता प्रतिपादित की । ---------------

(ii) उन्होंने क्या असानी से छोड़ दिया ? ---------------

(iii) उन्होंने राजा से परिचित कराया । ---------------

(iv) उन्होंने पुत्र का नाम रखा । ---------------

7. **उदाहरण को देखकर शब्दों के रूप बदलिए -**

रियासत - रियासतें

बात - ---------------

नहर - ---------------

आँख - ---------------

छत - ---------------

दीवार - ---------------

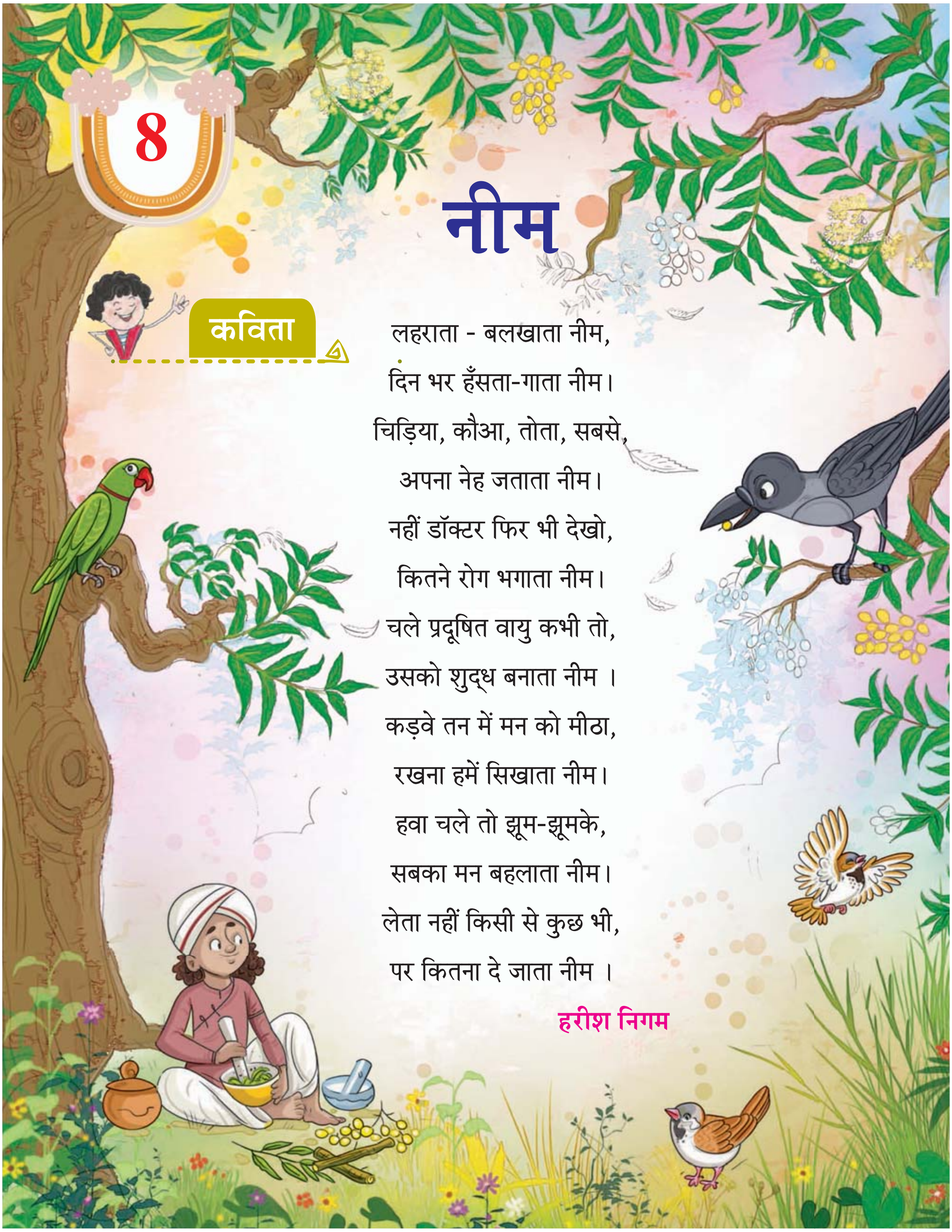

8

नीम

कविता

लहराता - बलखाता नीम,
दिन भर हँसता-गाता नीम।
चिड़िया, कौआ, तोता, सबसे,
अपना नेह जताता नीम।
नहीं डॉक्टर फिर भी देखो,
कितने रोग भगाता नीम।
चले प्रदूषित वायु कभी तो,
उसको शुद्ध बनाता नीम ।
कड़वे तन में मन को मीठा,
रखना हमें सिखाता नीम।
हवा चले तो झूम-झूमके,
सबका मन बहलाता नीम।
लेता नहीं किसी से कुछ भी,
पर कितना दे जाता नीम ।

हरीश निगम

शब्दार्थ

लहराना - तरंगित होना / झूमना	भगाना - दूर करना
बलखाना - उठना और गिरना	कड़वा - कटु / तिक्त
कौआ - काक, वायस	हवा - पवन, वायु
नेह - प्यार, स्नेह	झूम-झूम के - नाच-नाच कर
जताना - प्रकट करना	बहलाना - दिल खुश करना

बातचीत के लिए

1. नीम के बारे में आप क्या-क्या जानते हैं ?
2. आप अपने आसपास बहुत से पेड़-पौधे देखते होंगे । उनमें से कुछ पेड़-पौधों के नाम बताइए ।
3. कौन-सा पेड़ आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों ?

सीचिए और लिखिए

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में होने चाहिए।

क) इस कविता में किन-किन पक्षियों के नाम आए हैं ? उनके नाम लिखिए।

ख) नीम से किन-किन रोगों का इलाज हो सकता है ? किन्हीं तीन के नाम पता कर लिखिए ।

ग) नीम का वृक्ष सबका मन कैसे बहलाता है ?

घ) नीम का वृक्ष पक्षियों से अपना स्नेह किस प्रकार जताता है ?

ङ) आपके परिवार के सदस्य और अध्यापक आपसे अपना स्नेह किस प्रकार जताते हैं ?

2. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

''चले प्रदूषित वायु कभी तो
उसको शुद्ध बनाता नीम।''

(क) 'प्रदूषित वायु' से आप क्या समझते हैं ?

(ख) वृक्ष प्रदूषित वायु को कैसे शुद्ध बनाता है ?

3. नीचे लिखे भाव कविता की किन पंक्तियों में है ?

(क) 'नीम का वृक्ष डॉक्टर नहीं है, फिर भी बहुत सारे रोगों को भगाता है।'

कविता की पंक्तियाँ --

(ख) 'नीम का वृक्ष दिन भर प्रसन्न रहता है।'

कविता की पंक्तियाँ --

अनुमान और कल्पना

1. आपने नीम के बहुत-से गुणों के बारे में जाना । इसकी टहनियों, पत्तियों, फलों और फूलों में औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसलिए इसे औषधीय वृक्ष भी कहते हैं। अपने सहपाठियों से चर्चा कर कुछ और औषधीय पेड़-पौधों एवं लताओं के नाम नीचे लिखिए –

जैसे - ---------------- तुलसी ----------------   --

--   --

--   --

2. नीचे नीम के बारे में कुछ आधे-अधूरे वाक्य लिखे हैं। सहपाठियों से चर्चा कर इन वाक्यों को पूरा कीजिए।

- मेरा एक-एक भाग -- है ।

- मेरी पत्तियों का आकार .... और रंग .... होता है।
- मेरी पत्तियों को उबाल कर उस पानी से नहाने से .... दूर होता है ।
- मेरी पत्तियों का स्वाद .... होता है ।
- मेरी कोमल टहनियाँ दाँत .... करने के काम आती हैं ।
- .... ऋतु में मेरी छटा देखने लायक होती है।

भाषा - ज्ञान

1. नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

लड़की पुस्तक पढ़ती है।

लड़का पुस्तक पढ़ता है।

इन दोनों वाक्यों में लड़की व लड़का संज्ञा शब्द हैं। आपने ध्यान दिया होगा कि लड़की के लिए ‘पढ़ती’ और लड़के के लिए ‘पढ़ता’ क्रिया-रूप का प्रयोग किया गया है। यह अंतर लिंग के कारण आया है। ‘लिंग’ संज्ञा शब्द के बारे में बताता है कि यह संज्ञा शब्द स्त्रीवाचक है या पुरुष वाचक। इसे दिए गए उदाहरणों से समझ सकते हैं।

माताजी समाचार पढ़ती हैं।

पिताजी भाजी काटते हैं।

मनीषा पतंग उड़ाती है।

अरविंद झूला झूलता है।

टमाटर खट्टा है।

इमली खट्टी है।

(क) अब इस कविता में आए उन शब्दों को लिखिए-

जिनसे पता चलता है कि नीम पुलिंग है।

जैसे- लहराता नीम

....

....

....

....

(ख) नीचे रखी टोकरी में बहुत से फल और साग-भाजी दिखाए गए हैं। इन्हें स्त्री लिंग और पुल्लिंग की श्रेणी में रखिए-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
--	--
--	--
--	--
--	--
--	--
--	--

(ग) 'क' स्तंभ और 'ख' स्तंभ का मिलान कीजिए -

क	**ख**
कड़वा	कितने
कौआ	तोते
तोता	केले
केला	कड़वे
कितना	कौए

3. नीचे कुछ पेड़-पौधों की पत्तियों के चित्र हैं । उनके नाम उलट-पुलट गए हैं। उन्हें पहचान कर मिलान कीजिए। अपनी भाषा में भी उनके नाम पता करके लिखिए-

पत्तियों के चित्र	पत्तियों के नाम	ओड़िआ भाषा में नाम
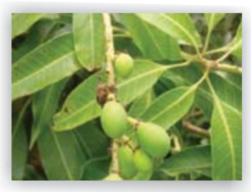	बरगद	
	धनिया	
	आम	
	तुलसी	
	केला	
	पीपल	

4. प्रदूषित शब्द में 'प्र' लगा है। ऐसे ही कुछ और शब्द ढूँढ कर नीचे लिखिए-

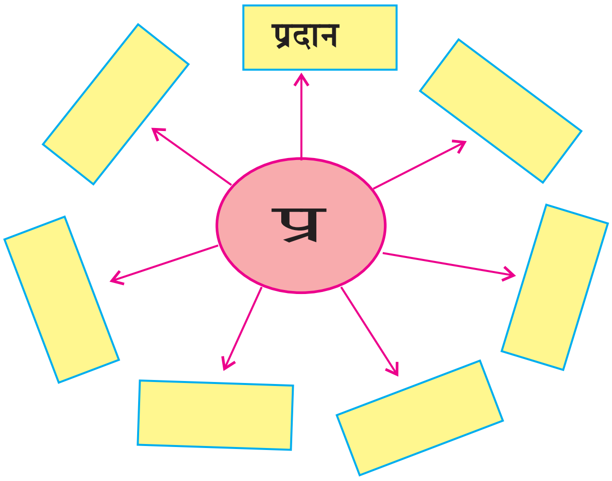

5. 'क' स्तंभ और 'ख' स्तंभ का मिलान कीजिए

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
दिन	काक
चिड़िया	हवा
कौआ	शरीर
वायु	दिवस
तन	पंछी

6. नीचे लिखे शब्दों का विपरीत शब्द लिखिए –

दिन ....

हँसना ....

शुद्ध ....

मीठा ....

लेना ....

9 चंद्रयान

संवाद

(कक्षा में अध्यापिका का आगमन और सभी बच्चों का अभिवादन।)

सभी विद्यार्थी - सुप्रभात अध्यापिका जी !

अध्यापिका - सुप्रभात बच्चो ! आज हम चाँद के बारे में कुछ बातचीत करते हैं। आप सबने चाँद देखा है न! आपने चाँद की बहुत-सी कविताएँ भी गाई हैं।

सभी विद्यार्थी - जी हाँ... हमने चाँद देखा है। चाँद कभी दिखाई देता है और कभी नहीं भी दिखता।

अध्यापिका - अच्छा! ऐसा क्यों होता है कि चाँद कभी दिखता है और कभी नहीं दिखता ?

एक विद्यार्थी - अध्यापिका जी ! चाँद का मन है, वह दिखे न दिखे।

दूसरा विद्यार्थी - वह बादलों के साथ छुपन-छुपाई खेलता होगा।

तीसरा विद्यार्थी - मेरा तो बहुत मन करता है कि मैं चाँद पर जाऊँ ।

अध्यापिका - क्या हम चाँद पर जा सकते हैं ?

सभी विद्यार्थी - जी हाँ...!

अध्यापिका - कैसे ?

सभी विद्यार्थी - रॉकेट से...

अध्यापिका - ठीक है! अब यह बताओ कि क्या कोई रॉकेट अभी तक चाँद पर गया है?

सभी विद्यार्थी - हाँ हाँ गया है। एक नहीं कई गए हैं।

अध्याधिका - अच्छा! कौनसा रॉकेट ?

सभी विद्यार्थी - चंद्रयान 1, 2, 3 !

अध्यापिका - शाबाश! आपको चंद्रयानों के बारे में तो पता है । हमारे वैज्ञानिकों ने चंद्रयान- 3 को चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर उतारा है। ऐसा करने वाला भारत पहला देश है। है न हम सबके लिए गौरव की बात !

एक विद्यार्थी - यह दक्षिणी ध्रुव क्या है ?

अध्यापिका - जैसे दक्षिण दिशा में धरती का दक्षिणी ध्रुव है, वैसे ही चंद्रमा का भी दक्षिणी ध्रुव है। कठिन परिस्थिति के कारण वहाँ कोई भी यान उतारना मुश्किल है। पर हमारे वौज्ञानिकों ने यह गौरवपूर्ण कार्य कर लिया है। आज की हमारी बातचीत इसी चंद्रयान के बारे में है। हमारे देश के वैज्ञानिक चाँद पर रॉकेट भेजकर यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि चाँद पर क्या-क्या है?

कुछ विद्यार्थी - हमारा भी मन करता है कि हम भी चाँद पर जाकर वहाँ के बारे में जानें ।

अध्यापिका - हाँ.. हाँ, क्यों नहीं। अच्छा यह बताएँ कि वैज्ञानिकों को चाँद पर क्या-क्या मिला होगा?

कुछ विद्यार्थी - पानी, मिट्टी ......।

अध्यापिका - एकदम सही! आप तो बहुत कुछ जानते हैं। आपको तो पता ही है कि चाँद धरती से बहुत दूर है। इसलिए वैज्ञानिकों ने चाँद पर एक रॉकेट भेजा और जानने का प्रयास किया कि

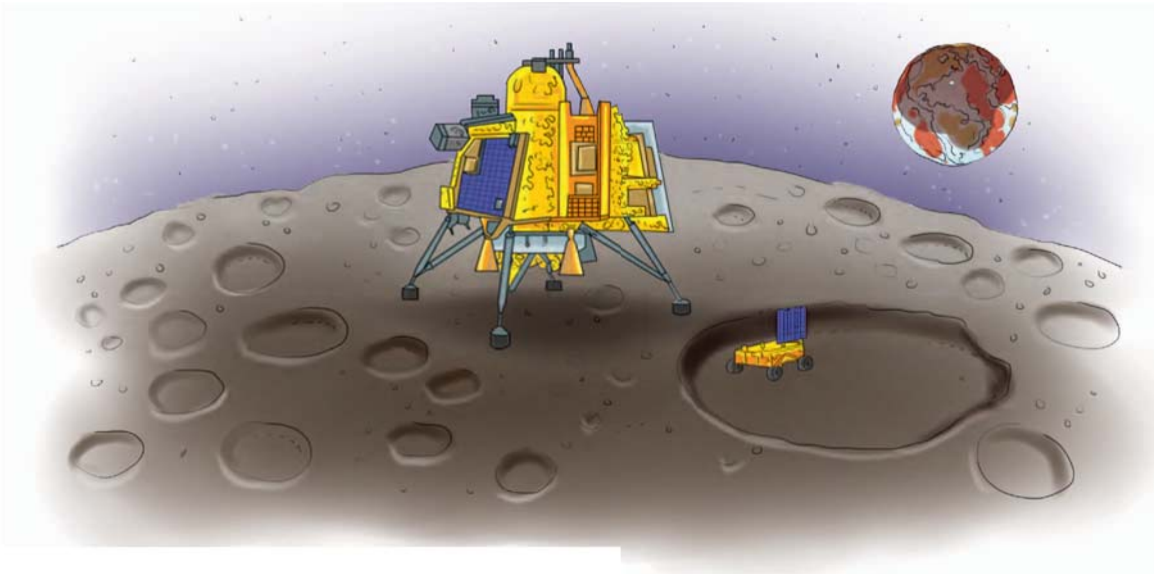

वहाँ क्या-क्या है । उन्होंने इसे 'चंद्रयान मिशन' नाम दिया। 'चंद्रयान' ने चाँद के चारों ओर चक्कर लगाया और यह पता लगाया कि चाँद पर पानी हैं।

एक विद्यार्थी - वैज्ञानिकों को इतनी दूर जाकर पानी का पता लगाने की क्या आवश्यकता थी ? हमारे घर के आस पास पानी से भरे तीन-चार पोखर हैं।

एक अन्य विद्यार्थी - वे पानी लेने नहीं, वे तो चाँद के रहस्यों का पता लगाने गए थे।

अध्यापिका - हाँ, बिलकुल ठीक कहा। एक रहस्य जानने के बाद वैज्ञानिकों की जिज्ञासा और बढ़ी। उन्होंने फिर से रॉकेट भेजने की योजना बनाई । उन्होंने दूसरा रॉकेट भेजा और इसे 'चंद्रयान-2' का नाम दिया; पर यह कुछ खराबी के कारण चाँद पर ठीक से उतर नहीं पाया। वैज्ञानिकों ने हार नहीं मानी। वे फिर से अपने कार्य में जुट गए और उनका परिश्रम रंग लाया। इस बार 'चंद्रयान-3' चाँद पर पहुँच गया। आप सबने इसे टीवी पर देखा होगा।

एक विद्यार्थी - मैं टीवी पर तो नहीं देख पाई थी, पर मैंने रेडियो पर सुना था।

एक अन्य विद्यार्थी - और प्रधान अध्यापिका ने भी तो सुनाया था।

अध्यापिका - तो देखा आपने, अपने देश के वैज्ञानिकों के परिश्रम का फल !

एक विद्यार्थी - अब चाँद पर क्या चल रहा है ?

अध्याधिका - बहुत अच्छा प्रश्न है, शाबाश ! आप को पता है जो मशीन चाँद पर उतरी है, उसका नाम 'विक्रम लेंडर' है । यह लैंडर अपने साथ एक अन्य मशीन लेकर गया है, जिसका नाम 'प्रज्ञान' है। यही प्रज्ञान चाँद पर घूम-घूम कर यह पता लगा रहा है कि चाँद की मिट्टी पृथ्वी जैसी है या नहीं; चाँद पर रहना संभव है या नहीं....

एक विद्यार्थी - यह तो हमें पता ही नहीं था। (आश्चर्य से)

अध्यापिका - तो देखा आपने, लगातार प्रयास करने से कठिन से कठिन काम भी सफल होता है।

विद्यार्थी - हम सब वो चंदावाला गाना गाएँ ?

अध्यापिका - आओ ! सब मिलकर गाते हैं।

''चंदा के गाँव में, तारों की छाँव में,
हम सैर करने जाएँगे, हम सैर करने जाएँगे,
हम कैसे जाएँगे ? हम कैसे जाएँगे ?
हम चंद्रयान से जाएँगे, हम चंद्रयान से जाएँगे।''

शब्दार्थ

संवाद - कथोपकथन	पोखर - तालाब
छुपन-छुपाई खेल - लुका-छुपी खेल	रहस्य - राज, गुप्त बात
दक्षिणी ध्रुव - दक्षिण मेरु, कुमेरु	जिज्ञासा - जानने की इच्छा
प्रयत्न - चेष्टा, कोशिश, प्रयास	छाँव - छाया
धरती - पृथ्वी	सैर-भ्रमण

बातचीत के लिए

1. हम आकाश में सूरज, चाँद और तारे देखते हैं। इनके बारे में बताइए ।
2. चाँद के साथ जुड़े अपने अनुभव या कोई रोचक बात बताइए या चाँद पर कोई कविता सुनाइए ।
3. पूर्णिमा के दिन कौन से त्योहार मनाए जाते हैं, उन पर चर्चा कीजिए ।
4. आपने चंद्रयान के बारे में जो कुछ सुना है या पढ़ा है उसे बताइए ।

सोचिए और लिखिए

1. निम्न-लिखित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्पों में से चुनिए –

(i) चाँद पर जाने वाला भारत के अंतरीक्ष यान का नाम क्या है ?

(क) एपोलो (ख) चंद्रयान (ग) गगनयान

(ii) चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर सफलता पूर्वक उतरने वाले यान का नाम क्या है ?

(क) चंद्रयान-1 (ख) चंद्रयान-2 (ग) चंद्रयान-3

(iii) वैज्ञानिक चाँद पर क्यों जाना चाहते हैं ?

(क) वैज्ञानिक पूरी धरती घूम चुके हैं।

(ख) वैज्ञानिक चाँद के बारे में अधिक जानना चाहते हैं।

(ग) वैज्ञानिक चाँद पर कहानी लिखना चाहते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए-

(क) विद्यार्थियों को चंद्रयान के बारे में कौन बता रही हैं ?

(ख) कौन बादलों के साथ छुपन-छुपाई खेलता है ?

(ग) चंद्रयान-3 चाँद के किस भाग पर उतरा ?

(घ) खराबी के कारण कौन-सा यान चाँद पर उतर नहीं पाया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए-

(क) दक्षिणी ध्रुव क्या है ?

(ख) भारत के वैज्ञानिकों ने कौन-सा गौरवपूर्ण कार्य कर दिखाया ?

(ग) वैज्ञानिकों को चाँद पर क्या-क्या मिला ?

(घ) चंद्रयान की जो मशीन चाँद पर उतरी उसका नाम क्या है ?

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना कीजिए कि आप चाँद पर जा रहे हैं, तो आप-

(क) अपने साथ किसे ले जाना चाहेंगे और क्यों ?

(ख) चाँद पर जाते समय आप कौन-कौन सी चीजें लेकर जाएँगे ?

(ग) चाँद पर पहुँच जाने के बाद आप वहाँ क्या करेंगे ?

2. क्या आप जानते हैं कि चाँद -

(क) किस दिन पूरा दिखाई देता है ?

(ख) किस दिन बिल्कुल दिखाई नहीं देता ?

3. **चाँद को चंदामामा कहा जाता है। चाँद को चंद्रमा भी कहते हैं ।**

चाँद के कुछ और नामों को दिए गए स्थानों पर लिखिए -

..........चंद्रमा..........

....

....

....

4. **नीचे दिए गए वाक्यों के लिए कोष्ठक से सही शब्द छाँटकर लिखिए–**

(कृषक सैनिक वैज्ञानिक शिक्षक चिकित्सक)

(क) विज्ञान की नई खोज करने वाले --------------------------

(ख) शिक्षा देने वाले --------------------------

(ग) रोग की चिकित्सा करने वाले --------------------------

(घ) देश की रक्षा करने वाले --------------------------

(ङ) खेतों में अन्न उगाने वाले --------------------------

5. **यदि चंद्रयान मिशन से जुड़े वैज्ञानिक आपके विद्यालय में आएँ तो आप उनसे कौन-से सवाल करेंगे ? कोई दो सवाल लिखिए –**

(क) --------------------------------

(ख) --------------------------------

भाषा - ज्ञान

1. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

बात-चीत --

छुपन-छुपाई --

प्रयत्न --

वैज्ञानिक --

चक्कर --

योजना --

जिज्ञासा --

परिश्रम --

2. विपरीतार्थक शब्द लिखिए -

जैसे-

अच्छा - .... **बुरा** ....

दक्षिण - ....

दूर - ....

हार - ....

सफल - ....

3. समान अर्थवाले शब्द कोष्ठक में से चुनकर लिखिए –

(मेहनत कोशिश छात्र-छात्रा जल पृथ्वी)

विद्यार्थी - ....

पानी - ....

प्रयास - ....

धरती - ....

परिश्रम - ....

4. वैज्ञानिक शब्द दो शब्दों के मेल से बना है –

जैसे-विज्ञान + इक

उसी प्रकार 'इक' जोड़कर नीचे दिए गए शब्दों को बदलिए–

भूगोल + ... = ...

इतिहास + ... = ...

साहित्य + ... = ...

समाज + ... = ...

शरीर + ... = ...

चरित्र + ... = ...

5. स्तभों का मिलान कीजिए–

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
दक्षिणी	देश
पहला	जिज्ञासा
कठिन	ध्रुव
गौरवपूर्ण	परिस्थिति
वैज्ञानिक	कार्य

6. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए -

उदाहरण - हम चाँद के बारे में जानेंगे ।

हम चाँद के बारे में जानें।

क. हम यह बात बताएँगे।

ख. हम छुपन - छुपाई खेलेंगे ।

ग. मैं चाँद पर जाऊँगा ।

ध. हम चंदा वाला गाना गाएँगे ।

ङ. वैज्ञानिक चाँद पर रॉकेट भेजेंगे ।

---

7. **अध्यापिका कक्षा में आईं।** विद्यार्थियों ने उनका अभिवादन किया। उन्होंने बच्चों को 'चंद्रयान' पाठ पढ़ाया। विद्यार्थियों ने उन्हें ध्यान से सुना । उन पर अध्यापिका के कथन का बहुत प्रभाव पड़ा । वे अध्यापिका पर बहुत प्रसन्न हुए।

यहाँ 'वे'; के विभिन्न रूपों का परिचय दिया गया है। छात्र 'ये' के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर वाक्य बनाएँ । अध्यापक छात्रों को, यह, वह, कौन आदि के रूपों का अभ्यास कराएँ।

इकाई-4

10

हिमालय

कविता

युग-युग से है अपने पथ पर
देखो कैसे खड़ा हिमालय !
डिगता कभी न अपने प्रण से
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय !

जो भी बाधाएँ आईं
उन सबसे ही लड़ा हिमालय,
इसीलिए तो दुनिया भर में
हुआ सभी से बड़ा हिमालय।

खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आँधी पानी में,
खड़े रहो तुम अविचल होकर
सब संकट तूफानी में।

डिगो न अपने प्रण से तो तुम
सब कुछ पा सकते हो प्यारे,
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो
छू सकते नभ के तारे।

अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में
मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में।

सोहनलाल द्‌विवेदी

शब्दार्थ

डिगना - हटना	संकट - विपत्ति, खतरा
प्रण - प्रतिज्ञा, संकल्प	तूफानी - तूफान की तरह तेज
अड़ा रहना - दृढ़ रहना	प्यारे - प्रिय
बाधा - रुकावट, विघ्न	नभ - आकाश, आसमान
दुनिया/ जग - जगत, संसार	पथ - रास्ता
आँधी - धूल भरी हवा, तूफान	मुसीबत - संकट, विपत्ति
अविचल - शांत, स्थिर	

बातचीत के लिए

1. हिमालय पर्वत भारत की किस दिशा में है ? हिमालय के बारे में आप क्या जानते हैं ? बताइए ?
2. हिमालय की तरह अडिग रहने का मतलब क्या है ? बताइए।

सोचिए और लिखिए

1. जीवन में आगे बढ़ते समय हमारे सामने कौन-कौन-सी बाधाएँ आ सकती हैं ? उन्हें लिखिए।

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(क) डिगता कभी न अपने .... से

रहता प्रण पर अड़ा ....

(ख) खड़े रहो तुम .... होकर

सब .... तूफानी में।

(ग) डिगो न .... प्रण से तो तुम

.... पा सकते हो प्यारे

(घ) .... रहा जो अपने पथ पर

लाख .... आने में

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में दीजिए-

(क) हिमालय कब से अपने पथ पर खड़ा है ?

(ख) कौन अपने प्रण से कभी नहीं डिगता ?

(ग) हिमालय किससे न डरने की बात कह रहा है ?

(घ) कविता में किसे छूने की बात कही गई है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए-

(क) दुनिया भर में हिमालय कैसे बड़ा बना ?

(ख) हिमालय हमें क्या बता रहा है ?

(ग) 'नभ के तारों को छूना'- इसका अर्थ क्या है ?

(घ) जग में सफलता किसे मिलती है ?

अनुमान और कल्पना

1. (क) अगर हिमालय पर्वत न होता, तो क्या होता ?

   कोई तीन बातें लिखिए ।

   (ख) भविष्य में सफलता प्राप्त करने के लिए आप को क्या करना होगा ?

   (गा) हिमालय से हम क्या सीख सकते हैं ?

2. **हिमालय दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत है। हमारे देश में और भी कुछ पर्वत हैं। जैसे कि विंध्य । ऐसे और कुछ पर्वतों के नाम लिखिए**

   ....

   ....

भाषा - ज्ञान

1. **‘क’ विभाग के शब्दों के साथ ‘ख’ विभाग के सही समानार्थी शब्दों का मिलान कीजिए –**

‘क’	‘ख’
पथ	आसमान
संकट	तूफान
प्रण	रास्ता
नभ	विपत्ति
आँधी	प्रतिज्ञा

2. **कोष्ठक में दिए गए विपरीतार्थक शब्दों को नीचे दिए गए शब्दों के साथ मिलाइए–**

डिग - ____________

डर - ____________

ऊँचा - ____________

जीना - ____________

सफलता - ____________

(नीचा, निडर, मरना, असफलता, अडिग)

3. **इन शब्दों का अलग-अलग प्रयोग कर वाक्य बनाइए-**

बड़ा, दुनिया, अचल, मुसीबत, सब कुछ

4. **नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार बदलिए –**

बाधा - बाधाएँ	मुसीबत - मुसीबतें
छात्रा -	बात - ....
लता -	रात - ....
माला -	सड़क - ....
बालिका -	बहन - ....

11

हमारे मधुबाबू

जीवनी

कटक हाईस्कूल में एक लड़का पढ़ता था। अंग्रेजी के अध्यापक ने एक दिन एक कविता का गलत अर्थ बताया। बालक ने इसका विरोध किया। इससे अध्यापक ने अपने आपको अपमानित माना। बालक को स्कूल से निकाल दिया गया। वह इस निर्णय का विरोध करने के लिए कटक के मजिस्ट्रेट के पास पहुँचा। मजिस्ट्रेट साहब अंग्रेजी भाषी थे और वे स्कूल संचालन कमेटी के अध्यक्ष भी थे। उन्होंने बालक से कविता का अर्थ बताने को कहा। बालक ने सही अर्थ बता दिया। मजिस्ट्रेट खुश हुए और उसे स्कूल में फिर से दाखिला दिला दिया।

उस बालक का नाम था मधुसूदन । उनका जन्म कटक जिले के सत्यभामापुर में 28 अप्रैल, 1848 को हुआ था। उनके पिता का नाम था चौधुरी रघुनाथ दास और माता का नाम पार्वती देवी था।

वे कटक में एंट्रेंस पास करके उच्च शिक्षा के लिए कोलकाता गए। वहाँ से अंग्रेजी में एम.ए. और वकालत की परीक्षा में पास हुए। वे कटक में वकालत करने के लिए 1880 ई. में ओड़िशा लौट आए।

मधुबाबू मुकदमे में हमेशा सत्य का पक्ष लेते थे, लोगों को न्याय दिलाने के लिए प्रयत्न करते थे । अन्याय के शिकार होनेवाले गरीब लोगों की मदद करके उन्हें मुकदमों में जीता देते थे, इसलिए लोग उनका यशोगान करते थे।

मधुबाबू बिहार-ओड़िशा व्यवस्थापक सभा के सदस्य चुने गए थे। मंत्री भी बने थे। वे मानते थे कि एक मंत्री को बिना वेतन से राज्य की सेवा करनी चाहिए। उनके विचार से जब लोग सहमत न हुए तो उन्होंने मंत्री पद छोड़ दिया। सदस्य रहते समय वे व्यवस्थापक सभा में ओडिशा की दुर्दशा का चित्र उपस्थापित कर स्वतंत्र सहायता की माँग करते थे ।

वे जानते थे कि उद्योग का विकास न होने से ओड़िशा का आर्थिक विकास नहीं हो सकेगा। इसलिए उन्होंने 'उत्कल टैनेरी' की स्थापना कर जूते बनवाने का काम शुरू किया था। वे कटक में सोने-चाँदी के तारकशी काम को बढ़ावा देने के लिए कारीगरों की मदद करते थे।

उस समय ओड़िआ भाषी क्षेत्रों को अलग-अलग प्रांतों में मिला दिया गया था। समग्र ओड़िआ भाषी क्षेत्रों को एक शासनाधीन करके स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश के गठन के लिए उन्होंने 1903 ई. में 'उत्कल सम्मिलनी' की प्रतिष्ठा की थी। उत्कल जननी की दुर्दशा देखकर वे रो पड़ते थे । वे समाज की प्रगति के लिए नारी शिक्षा के विकास और जाति प्रथा के विलोप पर जोर देते थे।

मधु बाबू बहुत बड़े दानी थे। वकालत से बहुत पैसे कमाते थे और सबकुछ गरीबों में बाँट देते थे। आखिर वे निर्धन बन गए। पर उनके मन में कोई दु:ख नहीं था। जब उन्हें पाई-पाई की जरूरत थी, उस समय किसी ने पुरानी फीज एक हजार रुपये भेज दिए। यह जानकर मधु बाबू ने कहा, ''ये रुपये हरिजन बस्ती में कुआँ खोदने के लिए दे दो, मैंने उनकी मदद करने का वादा किया था ।''

मधुसूदन दास जी ओड़िशा के प्रथम एम.ए., प्रथम वकील, प्रथम मंत्री तथा प्रथम इंग्लैंड यात्री थे । उनका जीवन ओड़िशा के विकास के लिए समर्पित था। लोग उन्हें श्रद्धा से 'कुल वृद्ध' और 'उत्कल गौरव' कहा करते थे । बच्चे प्राय: गाया करते थे-

मन लगाकर पढ़ूँगा, काले घोड़े पर चढ़ूँगा, मधु बाबू से लड़ूँगा ।

मधु बाबू जीवन भर स्वतंत्र ओड़िशा के निर्माण के लिए लड़ते रहे। अंत में 1 अप्रैल, 1936 को स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश का गठन हुआ। पर इससे लगभग दो साल पहले 4, फरवरी 1934 को उनका निधन हो गया था।

देवहरि साहु

शब्दार्थ

निर्णय- फैसला	पाई - पैसा
दाखिला - प्रवेश	जरूरत - आवश्यकता
प्रयत्न- चेष्टा	वृद्ध - बूढ़ा
मदद - सहायता	श्रद्धा - सम्मान का भाव
दुर्दशा - दुर्गति	तारकशी - सोने चाँदी के तार से गहने बनाने की कला।
निर्धन - धनहीन	

बातचीत के लिए

1. आप अपने इलाके के किसी महान व्यक्ति के बारे में बताइए।
2. क्या-क्या काम करने से आप भी महान बन सकते हैं, कक्षा में उनकी चर्चा कीजिए।
3. ओड़िशा की उन्नति के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

सोचिए और लिखिए

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए-

(क) बालक को क्यों स्कूल से निकाल दिया गया ?

(ख) मजिस्ट्रेट क्यों बालक पर खुश हुए ?

(ग) मधुसूदन व्यवस्थापक सभा में अपने प्रदेश के लिए क्या करते थे ?

(घ) उत्कल सम्मिलनी का उद्देश्य क्या था ?

(ङ) मधुसूदन ने अपनी फीज का उपयोग कैसे किया ?

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए -

(क) मधु बाबू का जन्म कब हुआ था ?

(ख) मधु बाबू के पिता जी का नाम क्या था ?

(ग) मधु बाबू की माता जी कौन थीं ?

(घ) मधुबाबू उच्च शिक्षा के लिए कहाँ गए ?

(ङ) मधुबाबू किन लोगों को मुकदमे में जिता देते थे ?

(च) मधु बाबू ने क्यों मंत्री पद छोड़ दिया ?

(छ) उत्कल सम्मिलनी का गठन कब हुआ था ?

(ज) हम किन्हें उत्कल गौरव के नाम से जानते हैं ?

(झ) स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश का गठन कब हुआ ?

(ञ) मधुबाबू का देहांत कब हुआ था ?

3. दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनकर लिखिए -

(क) मधुसूदन को स्कूल से क्यों निकाल दिया गया ?

(i) वे पाठ में कमजोर थे।

(ii) उन्होंने शिक्षक के गलत अर्थ का विरोध किया था।

(iii) उन्होंने बुरा बर्ताव किया था ।

(iv) वे पढ़ाई में बहुत तेज थे ।

(ख) मधुबाबू ने ओड़िशा में उद्योग के विकास के लिए क्या किया ?

(i) कुआँ खोदने के लिए पैसे दिए।

(ii) अदालत में वकालत की ।

(iii) उत्कल टैनरी की स्थापना की ।

(iv) लोगों की आर्थिक मदद की ।

(ग) लोग मधु बाबू को श्रद्धा से क्या कहते थे ?

(i) भक्त कवि (ii) उत्कलमणि

(iii) ओड़िशा के वरपुत्र (iv) उत्कल गौरव

4. दिए गए अनुच्छेद की खाली जगहों को पाठ से शब्द ढूँढकर लिखिए और अनुच्छेद फिर से पढ़िए ।

अनुच्छेद : उस समय ______ भाषी क्षेत्रों को____ ____ प्रांतों में मिला दिया गया था। समग्र ओड़िआ भाषी _______ को एक शासनाधीन करके _________ ओड़िशा प्रदेश गठन के लिए _______ ई. में उन्होंने ____________ की प्रतिष्ठा की थी।_______ जननी की_______देखकर वे रो पड़ते थे ।

अनुमान और कल्पना

1. मधुबाबू अपने जीवन काल में सत्य और न्याय के लिए लड़ते रहे। ओड़िशा के विकास के लिए काम करते रहे। अपना स्वार्थ छोड़कर दूसरों की सेवा की । वे महापुरुष बन गए। आप कल्पना कीजिए कि आप भविष्य में क्या बनना चाहते हैं ? कक्षा में अपने-अपने विचार व्यक्त करें ।
2. स्वतंत्र ओड़िशा बनाने के लिए 'उत्कल सम्मिलनी' का गठन किया गया था। कक्षा में विभिन्न समूह में बैठकर चर्चा कीजिए कि आप किन-किन संस्थाओं के नाम जानते हैं और उनके उद्देश्य क्या-क्या हैं ?
3. ओड़िशा के विभिन्न महापुरुषों के बारे में जानकारी हासिल करके उन्हें अपने सहपाठियों को सुनाइए।

भाषा - ज्ञान

1. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

विरोध - ----------------------------------

निर्णय - ----------------------------------

विकास - ----------------------------------

स्वतंत्र - ----------------------------------

दुर्दशा - ----------------------------------

निधन - ----------------------------------

2. कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

जैसे-फल - परिणाम और खाने का फल

वैसे ही नीचे दिए गए शब्दों के दो अलग-अलग अर्थ लिखिए

पत्र - --------------- ---------------

कर - --------------- ---------------

अंक - ---------------- ----------------

अंबर - ---------------- ----------------

3. कुछ पद हैं, जिनके साथ 'ने' आने से उनके रूप बदल जाते हैं।

उदाहरण के अनुसार रूपों को लिखिए –

उदाहरण- वह + ने = उसने

वे + ने =		यह + ने =	
ये + ने =		कौन + ने =	
जो + ने =		क्या + ने =	

4. नीचे दिए गए उदाहरणों के अनुसार वाक्यों को बदलिए –

उदाहरण – बालक विरोध करता है। बालक ने विरोध किया।

(i) वह सारी बातें बताती है। - --

(ii) वह खाना खाता है। - --

(iii) वे काम शुरू करते हैं। - --

(iv) वे रुपये भेज देते हैं। - --

(v) वह मदद करने को कहता है। - --

12 हम अनेक किंतु एक

कविता

हैं कई प्रदेश के,
किंतु एक देश के,
विविध रूप-रंग हैं,
भारत के अंग हैं।
भारतीय वेश एक
हम अनेक किंतु एक ।

बोलियाँ हजार हैं,
टोलियाँ हजार हैं,
कंठ भी अनेक हैं,
राग भी अनेक हैं,
किंतु गीत-बोल एक
हम अनेक किंतु एक ।

एक मातृभूमि है,
एक पितृभूमि है,
एक भारतीय हम,
चल रहे मिला कदम,
लक्ष्य के समक्ष एक
हम अनेक किंतु एक ।

–द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

शब्दार्थ

प्रदेश - प्रांत, राज्य	समय - सामने
विविध - कई प्रकार के	कंठ - गला,
टोली - दल, मंडली	भारतीय वेश एक - भारतीय वेश-भूषा अनेक होने पर भी भाव में सब एक है ।
लक्ष्य - उद्देश्य	

बातचीत के लिए

1. आप किस देश में रहते हैं ? आपके प्रदेश का नाम क्या है ?
2. आपके घर में कौन-सी भाषा बोली जाती है ?
3. आपके घर के आस-पास के लोग कौन-सी भाषा बोलते हैं ?
4. आपके देश के कुछ प्रदेशों का नाम बताइए ।

सोचिए और लिखिए

1. दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए-

(क) 'हम अनेक, किंतु एक', उदाहरण देकर इस बात को समझाइए ।

(ख) कविता में भारत के विविध रूप-रंग के बारे में बताया गया है ।

यहाँ विविध रूप-रंग का अर्थ क्या है ?

(ग) 'चल रहे मिला कदम' इस पंक्ति में किनके कदम मिलाकर चलने की बात कही गई है ?

2. सही विकल्प चुनिए-

(क) हमारे देश में बोलियाँ कितनी हैं ?
(एक, हजार, एक सौ, एक लाख)

(ख) हम सब क्या हैं ?

(भारतीय, ओड़िशा वासी, बिहारी, बंगाली)

(ग) हम क्या मिलाकर चल रहे है ?

(हाथ, पैर, कदम, लक्ष्य)

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना कीजिए और लिखिए अगर हम एक नहीं होते तो क्या होता ?

2. विविधता में एकता होने से हमें क्या लाभ हुआ है ?

3. भारत में बहुत-सी भाषाएँ बोली जाती हैं। आप सहपाठियों के साथ चर्चा करते हुए किन्हीं दस भाषाओं के नाम बताइए ।

भाषा - ज्ञान

1. कविता से समान ध्वनिवाले शब्द छाँटकर लिखिए-

प्रदेश ------------------------------------

रंग ------------------------------------

हम ------------------------------------

बोलियाँ ------------------------------------

2. समान ध्वनिवाले कुछ शब्द अपने मन से लिखिए-

बोली -----------, -----------, -----------, -----------

एक -----------, -----------, -----------, -----------

राग -----------, -----------, -----------, -----------

3. भूमि शब्द जोड़कर कुछ अन्य शब्द बनाइए -

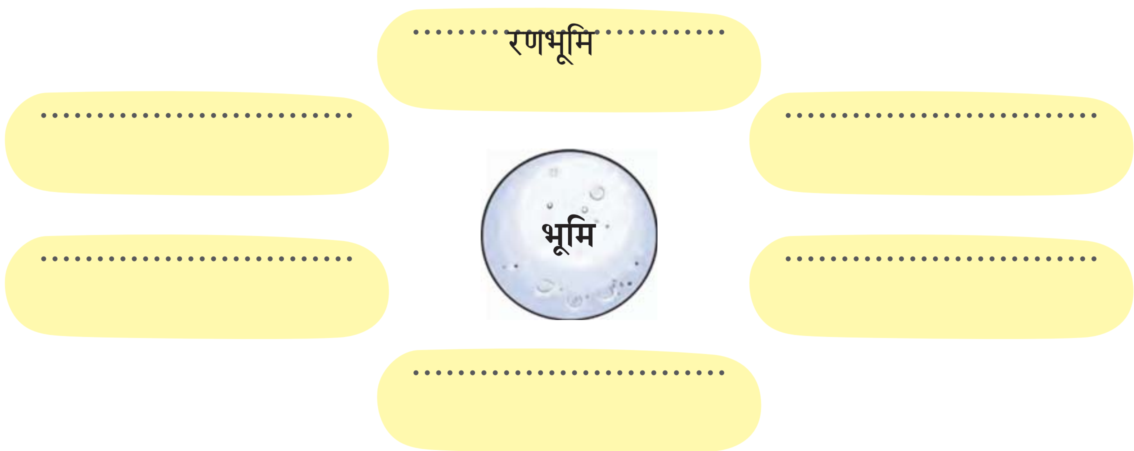

4. नीचे दिए गए उदाहरण को देखकर शब्दों को बदलिए -

(जैसे 'बोली' से 'बोलियाँ' हुई है, उसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों का रूप क्या बनेगा ?)

बोली - - - - - - - - - - - - - - - बोलियाँ

टोली -

नदी -

लड़की- - - - - - - - - - - - - - - - - - -

मछली- - - - - - - - - - - - - - - - - - -

5. समानार्थी शब्दों को छाँटिए और उन्हें जोड़कर लिखिए

कंठ	वेशभूषा	------------------------------
पहनावा	सामने	------------------------------
विविध	गला	------------------------------
समक्ष	विभिन्न	------------------------------

6. सही अर्थ वाले वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) 'भारतीय वेश एक' का अर्थ है

(i) सभी भारतीयों का एक ही पहनावा है ।

(ii) भारत में अनेक प्रकार की वेश-भूषाएँ हैं, लेकिन सभी भारतीय एक हैं।

(iii) भारतीयों का वेश एक है, पर भूषा अलग है ।

(ख) 'बोलियाँ' हजार हैं' में हजार का अर्थ है

(i) बहुत सारी बोलियाँ हैं ।

(ii) हजार बोलियाँ हैं ।

(iii) सीमित बोलियाँ हैं ।

7. नीचे लिखे उदाहरण को देख कर शब्द बदलिए -

कलम - कलमें

किताब - ....

सड़क - ....

आवाज - ....

रात - ....

बात - ....

8. नीचे लिखे शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए -

प्रदेश - ....

भारतीय - ....

अनेक - ....

मातृभूमि - ....

लक्ष्य - ....

9. सही स्थान पर अनुस्वार लगाकर शब्द बनाइए -

कठ -	परतु - ....
रग -	अनत - ....
चचल -	कपन - ....

13 सुंदर हॉकी का गढ़

सिर्फ पढ़ने के लिए

ओड़िशा के सुंदरगढ़ जिले को सुंदर हॉकी का गढ़ कहा जाता है। यहाँ के कई गाँव ऐसे हैं, जहाँ से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के हॉकी खिलाड़ी निकले हैं। सुंदरगढ़ मुख्यत: एक जनजातीय क्षेत्र है। यहाँ के ज्यादातर लोग गाँवों और कसबों में निवास करते हैं। बहुत सारे इलाके पहाड़ और जंगलों से भरे होने के कारण दुर्गम भी हैं। यह इलाका भी खनिज संपदा से भरा हुआ है। यहाँ से राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी निकलना निश्चित रूप से आश्चर्यजनक है।

सुंदरगढ़ जिले का एक अनोखा गाँव है- सउनामुरा। इसे हॉकी गाँव भी कहा जाता है। रोज सौ से अधिक लड़के-लड़कियाँ निकल पड़ते हैं हॉकी खेलने के लिए। उनके मन में सपना रहता है दिलीप तिर्की जैसे खिलाड़ी बनने का। हाँ, दिलीप तिर्की इसी सउनामुरा गाँव में ही पैदा हुए थे। उन्होंने भारत के लिए 412 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने का रिकार्ड बनाया। 1996, 2000 और 2004 में आयोजित तीन ओलंपिक तथा 1998, 2002 और 2006 में आयोजित हॉकी विश्वकप में खेलना उनकी बड़ी उपलब्धि रही। 2004 के एथेंस ओलंपिक और 2006 में जर्मनी में आयोजित विश्वकप में दिलीप तिर्की ने भारतीय दल का नेतृत्व भी किया था।

बालिशंकरा ब्लॉक के अंतर्गत आने वाले सउनामुरा गाँव से कई और अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी भी निकले हैं। उनमें प्रमुख हैं - सुभद्रा प्रधान, दीपसान तिर्की और अमित रोहिदास। अमित रोहिदास वही खिलाड़ी हैं, जिन्हें दो-दो बार ओलंपिक का कांस्य पदक मिला है। 2021 में आयोजित टोक्यो ओलंपिक और 2024 के पैरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाले भारतीय हॉकी दल के वे सदस्य थे। अमित के अलावा वीरेंद्र लाकड़ा भी टोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजयी टीम में शामिल थे। वे भी सुंदरगढ़ जिले से हैं और गुरुंडिआ क्षेत्र के निवासी हैं।

सुंदरगढ़ जिले के बालिशंकरा ब्लॉक में और एक गाँव है लुलुकिडिहि । सउनामुरा की तरह यहाँ से भी पचास से अधिक राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी निकलने के साथ-साथ कई अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी भी आगे आए हैं। लुलुकिडिहि से आनेवाले प्रमुख खिलाड़ी हैं - इग्नेस तिर्की, प्रबोध तिर्की, विनिता टोप्पो, और दीपग्रेस एक्का। इग्नेस और प्रबोध दो सगे भाई हैं और दोनों में भारतीय टीम की कप्तानी भी की है । इग्नेस और दीपग्रेस को दो-दो ओलंपिक और विश्वकप में खेलने का मौका मिला है।

सुंदरगढ़ के और भी बहुत सारे खिलाड़ियों ने जूनियर और सीनियर स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करने के साथ अपने जिले का नाम रोशन किया है। पीटर तिर्की सुंदरगढ़ के पहले ऐसे खिलाड़ी थे, जिन्हें 1982 के जूनियर हॉकी विश्वकप में खेलने का मौका मिला था। इसके बारह साल बाद 1994 में ओड़िशा की पहली महिला खिलाड़ी के रूप में ग्लोरिया डुंगडुंग भारतीय टीम में शामिल हुई। ग्लोरिया सुंदरगढ़ के गरियामाल की निवासी थी। फिर 1995 में दिलीप तिर्की जैसे होनहार खिलाड़ी का आगमन हुआ। उन्होंने लगभग एक साथ कनिष्ठ और वरिष्ठ स्तर पर खेलना शुरू किया और बहुत बड़े खिलाड़ी बने। फिर भारतीय टीम में दिलीप के साथी के रूप में आए सुंदरगढ़ के तिलेइकोनी गाँव के लाजरूस बार्ला। लाजरूस एक ओलंपिक और दो विश्वकप में भारतीय दल के सदस्य थे। राजगांगपुर के विलियम खालको भी 2004 के ओलंपिक टीम में शामिल थे ।

महिला खिलाड़ियों में सुंदरगढ़ की ज्योति सुनिता कुलु, मुक्ताप्रभा बार्ला, विनिता टोप्पो, सुभद्रा प्रधान आदि विश्वकप में खेलने के साथ हॉकी की दुनिया में प्रसिद्ध हुईं। 2016 के रियो ओलंपिक और 2018 के लंदन महिला विश्वकप में तो कमाल हो गया। दोनों प्रतियोगिताओं में - सुंदरगढ़ की चार महिला खिलाड़ी भारतीय टीम में शामिल थीं। वे चारों खिलाड़ी थीं– दीप ग्रेस एक्का, लिलिमा मिंज, सुनीता लाकड़ा और नमिता टोप्पो । ऐसे देखा जाए तो यह सिलसिला अब भी जारी है और एक के बाद एक पुरुष और महिला खिलाड़ी राष्ट्रीय दल में शामिल होकर सुंदरगढ़ का नाम रोशन कर रहे हैं।

ऐसी खेल प्रतिभाओं की वजह से ही सुंदरगढ़, वास्तव में सुंदर हॉकी का गढ़ बन गया है। सुंदरगढ़ जिले से बहुत सारे खिलाड़ी निकलने के कारण इसे भारतीय हॉकी की नर्सरी भी कहा जाता है। हॉकी का खेल यहाँ के बहुत सारे लोगों के जीवन का अंग बन गया है। यहाँ के बहुत सारे युवाओं के लिए यह खेल आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों से उबरने का माध्यम भी है।

अब तो इस खेल की ढेर सारी सुविधाएँ सुंदरगढ़ के बच्चों को मिलने लगी हैं । जगह-जगह पर सिंथेटिक टर्फ बिछा दिए गए हैं। पर एक समय था, जब बच्चे बाँस या तेंदू की लकड़ी से बने स्टिक से हॉकी खेलते थे। उस स्थिति से निकलकर सुंदरगढ़ के युवाओं ने बहुत रास्ता तय किया है, जो कि अत्यंत सराहनीय है।

2022 में दिलीप तिर्की के हॉकी इंडिया का अध्यक्ष बनना, राउरकेला में अत्याधुनिक 'बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम' बनकर तैयार होना और यहाँ पर 2023 का विश्वकप आयोजित होना भी सुंदरगढ़ में हॉकी को बढ़ावा देने के लिए काफी है।

आशीष कुमार राय

चित्र देखकर खेल का नाम बताएँ-
जैसे-

------हॉकी------ | ------------------ | ------------------

------------------ | ------------------ | ------------------

------------------ | ------------------ | ------------------

पहेलियाँ

1. तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा-सीधा एक समान
   पानी में ही तैरता रहता, ढोता बहुत सामान ।

2. मेज पर बैठी एक रानी,
   सिर पर आग बदन में पानी।

3. सुबह-सुबह ही आता हूँ,
   दुनियाभर की खबरें देता हूँ।

4. क्या है जो बढ़ती ही रहती,
   घटने का तो नाम न लेती ।

5. एक जैसी दो चीजें, दोनों के रंग समान,
   एक बिछड़ जाए तो दूसरा न आए काम।

6. एक चादर मोतियों से भरा,
सबके सिर पर उल्टा धरा
झर-झर झरे पानी की धारा
पर एक भी मोती न नीचे गिरा।

7. मैं गर्मी में आता हूँ, सबके मन को भाता हूँ।
खट्टा-मीठा स्वाद है मेरा,
फलों का राजा कहलाता हूँ।

8. रोशनी ले पंखों में, उड़े अँधेरी रात में।
जलती बाती बिना तेल की, ठंड और बरसात में।

9. एक बड़ी चिड़िया आई
पंख फैला कर जगह बनाई
पकड़ी मछली एक न खाई।

उत्तर- 1. जहाज, 2. मोमबत्ती, 3. अखबार, 4- उम्र, 5- जूते, 6. आकाश और तारे, 7- आम, 8- जुगनू, 9- जाल

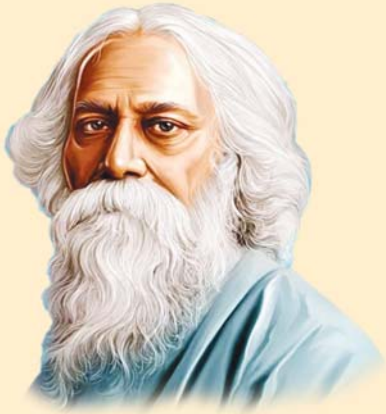

हमारा राष्ट्र गान

“जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।”

रवींद्रनाथ ठाकुर

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के बारे में संदेश

- स्वस्थ तन में स्वस्थ मन,
  सहज पढ़ाई सरल जीवन ।
- स्वास्थ्य ही संपत्ति, न आती विपत्ति
  खेलता है जो खेल,
  समूह भावना, अनुशासन से,
  बढ़ता मन का मेल ।
- खेल - खेल में पाठ पढ़ेंगे
  जीवन-पथ पर आगे बढ़ेंगे।
- सरस सुंदर रहेगा मन,
  खेल पर यदि रहेगा ध्यान ।
- हर रोज करो खेल-अभ्यास,
  बनेगा जीवन स्वस्थ, सरस ।
- करो व्यायाम, करो योग,
  भगाओ दु:ख, भगाओ रोग ।

भिन्नक्षम विद्यार्थियों के लिए संदेश

आओ मिल कर पढेंगे हम,
पता चलेगा कि हम सक्षम ।

स्कूल करेगा मार्ग दर्शन
ब्रेल पुस्तक पढ़ना आसान ।

भिन्नक्षम विद्यार्थियों के लिए

स्कूल वातावरण में भिन्नक्षम विद्यार्थियों को शामिल करवा के उनकी दक्षता के विकास के लिए 'सर्वशिक्षा अभियान' की ओर से सहायक सामग्री, ब्रेल पुस्तक, सहायक भत्ता, भिन्नक्षम प्रमाण-पत्र, डॉक्टरी परीक्षा, अस्त्रोपचार सुविधा, फिजियोथेरेपी, वाणी विकास तालीम (स्पीच थेरोपी), शिक्षक प्रशिक्षण, सृजनशीलता विकास के लिए कार्यक्रम, अभिभावकों के लिए तालीम एवं क्रीड़ा प्रतियोगिता आदि की व्यवस्थाएँ हैं ।

स्कूल स्टुडेंट हेल्पलाइन

सरकारी कार्य दिवस में विद्यालय से संबंधित समस्या, जैसे पुस्तक, पोशाक, मध्याह्न भोजन वितरण में अनियमितता, कक्षा-कक्ष की कमी, शिक्षकों का अभाव, पेय-जल की असुविधा, शिक्षण समस्या, विद्यालय के समय विद्यार्थियों की आकस्मिक दुर्घटना आदि के सारे अभियोग **24 घंटे** देयमुक्त हेल्पलाइन नंबर **1 8 0 0 3 4 5 6 7 2 2** से बताने की व्यवस्था है । इसके अलावा चाइल्ड हेल्प् लाइन **1098** (देयमुक्त) को फोन करने से यत्न तथा सुरक्षा आवश्यक करने वाले विद्यार्थियों को तत्काल मुफ़त में उपयुक्त सेवा देने की व्यवस्था उपलब्ध है।

शिक्षक शिक्षा निदेशालय और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर
मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर-1